قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

رُبَمَا

पारा - 14

رُبَمَا	يَوَدُّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَوْ	كَانُوْا	مُسْلِمِيْنَ ②	ذَرْهُمْ
कभी	चाहेंगे	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	काश	वो होते	मुसलमान	छोड़ दीजिए उन्हें

يَاْكُلُوْا	وَيَتَمَتَّعُوْا	وَيُلْهِهِمُ	الْاَمَلُ	فَسَوْفَ	يَعْلَمُوْنَ ③	وَمَآ
वो खाएं	और वो मज़े उड़ाएं	और ग़ाफ़िल रखे उन्हें	उम्मीद	पस अनक़रीब	वो जान लेंगे	और नहीं

اَهْلَكْنَا	مِنْ قَرْيَةٍ	اِلَّا	وَلَهَا	كِتَابٌ	مَّعْلُوْمٌ ④	مَا
हलाक किया हमने	किसी बस्ती को	मगर	जबकि उसके लिए	लिखा हुआ है	मालूम (वक़्त)	नहीं

تَسْبِقُ	مِنْ اُمَّةٍ	اَجَلَهَا	وَمَا	يَسْتَاْخِرُوْنَ ⑤	وَقَالُوْا	يٰٓاَيُّهَا
सबक़त करती/आगे बढ़ती	कोई उम्मत	अपने मुक़र्रर वक़्त से	और ना	वो पीछे रह सकती है	और उन्होंने कहा	ऐ

الَّذِيْ	نُزِّلَ	عَلَيْهِ	الذِّكْرُ	اِنَّكَ	لَمَجْنُوْنٌ ⑥ ط	لَوْ مَا	تَاْتِيْنَا
वो शख़्स	उतारा गया	जिस पर	ज़िक्र (क़ुरआन)	यक़ीनन तू	अलबत्ता मजनून है	क्यों नहीं	तू लाया हमारे पास

بِالْمَلٰٓئِكَةِ	اِنْ	كُنْتَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑦	مَا	نُنَزِّلُ	الْمَلٰٓئِكَةَ
फ़रिश्तों को	अगर	है तू	सच्चों में से	नहीं	हम उतारा करते	फ़रिश्तों को

اِلَّا	بِالْحَقِّ	وَمَا	كَانُوْٓا	اِذًا	مُّنْظَرِيْنَ ⑧	اِنَّا	نَحْنُ
मगर	साथ हक़ के	और नहीं	होते वो	तब	मोहलत दिए गए	बेशक हम	हम ही ने

نَزَّلْنَا	الذِّكْرَ	وَاِنَّا	لَهٗ	لَحٰفِظُوْنَ ⑨	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا
नाज़िल किया हमने	ज़िक्र (क़ुरआन)	और बेशक हम ही	उसकी	अलबत्ता हिफ़ाज़त करने वाले हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजे हमने

مِنْ قَبْلِكَ	فِيْ شِيَعِ	الْاَوَّلِيْنَ ⑩	وَمَا	يَاْتِيْهِمْ	مِّنْ رَّسُوْلٍ
आपसे पहले (रसूल)	गिरोहों में	पहले लोगों के	और नहीं	आया उनके पास	कोई रसूल

اِلَّا	كَانُوْا	بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑪	كَذٰلِكَ	نَسْلُكُهٗ	فِيْ قُلُوْبِ
मगर	थे वो	उसका	वो मज़ाक़ उड़ाते	इसी तरह	हम दाख़िल करते हैं उसको	दिलों में

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمُجْرِمِيْنَ ⑫ لا	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِهٖ	وَقَدْ	خَلَتْ	سُنَّةُ	الْاَوَّلِيْنَ ⑬
मुजरिमों के	नहीं वो ईमान लाऐंगे	इस पर	और तहक़ीक़	गुज़र चुका	तरीक़ा	पहलों का

وَلَوْ	فَتَحْنَا	عَلَيْهِمْ	بَابًا	مِّنَ السَّمَآءِ	فَظَلُّوْا	فِيْهِ
और अगर	खोल दें हम	उन पर	कोई दरवाज़ा	आसमान से	तो शुरू हो जाऐं	उसमें

يَعْرُجُوْنَ ⑭ لا	لَقَالُوْٓا	اِنَّمَا	سُكِّرَتْ	اَبْصَارُنَا	بَلْ	نَحْنُ
वो चढ़ते	अलबत्ता वो कहेंगे	बेशक	मदहोश कर दी गई हैं	निगाहें हमारी	बल्कि	हम तो

قَوْمٌ	مَّسْحُوْرُوْنَ ⑮ ع	وَلَقَدْ	جَعَلْنَا	فِي السَّمَآءِ	بُرُوْجًا
लोग हैं	सहरज़दा	और अलबत्ता तहक़ीक़	बनाए हमने	आसमान में	कई बुर्ज

ع 1 15 1

وَّزَيَّنّٰهَا	لِلنّٰظِرِيْنَ ⑯ لا	وَحَفِظْنٰهَا	مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ
और मुज़य्यन किया हमने उसे	देखने वालों के लिए	और हिफ़ाज़त की हमने उसकी	हर शैतान से

رَّجِيْمٍ ⑰ لا	اِلَّا	مَنِ	اسْتَرَقَ	السَّمْعَ	فَاَتْبَعَهٗ	شِهَابٌ
जो मरदूद है	मगर	जिसने	चुरा लिया	सुनी हुई बात को	तो पीछा करता है उसका	एक शोला

مُّبِيْنٌ ⑱	وَالْاَرْضَ	مَدَدْنٰهَا	وَاَلْقَيْنَا	فِيْهَا	رَوَاسِيَ	وَاَنْۢبَتْنَا
चमकता हुआ	और ज़मीन को	फैला दिया हमने उसे	और डाले हमने	उसमें	पहाड़	और उगाई हमने

فِيْهَا	مِنْ كُلِّ	شَيْءٍ	مَّوْزُوْنٍ ⑲	وَجَعَلْنَا	لَكُمْ	فِيْهَا
इसमें	हर तरह की	चीज़	मौज़ूं/मुनासिब	और बनाए हमने	तुम्हारे लिए	इसमें

مَعَايِشَ	وَمَنْ	لَّسْتُمْ	لَهٗ	بِرٰزِقِيْنَ ⑳	وَاِنْ	مِّنْ شَيْءٍ
असबाबे मईशत	और उसके लिए (भी)	नहीं हो तुम	जिसके	राज़िक़	और नहीं	कोई चीज़

اِلَّا	عِنْدَنَا	خَزَآئِنُهٗ	وَمَا	نُنَزِّلُهٗٓ	اِلَّا	بِقَدَرٍ
मगर	हमारे पास	ख़ज़ाने हैं उसके	और नहीं	हम उतारते उसे	मगर	साथ अंदाज़े

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَّعْلُوْمٍ (21)	وَاَرْسَلْنَا	الرِّيٰحَ	لَوَاقِحَ	فَاَنْزَلْنَا	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً
मालूम के	और भेजा हमने	हवाओं को	बार आवर	फिर नाज़िल किया हमने	आसमान से	पानी

فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ	وَمَآ	اَنْتُمْ	لَهٗ	بِخٰزِنِيْنَ (22)	وَاِنَّا	لَنَحْنُ
पस पिलाया हमने तुम्हें वो	और नहीं	हो तुम	उसे	ज़ख़ीरा करने वाले	और बेशक हम	यक़ीनन हम ही

نُحْيٖ	وَنُمِيْتُ	وَنَحْنُ	الْوٰرِثُوْنَ (23)	وَلَقَدْ	عَلِمْنَا
हम ज़िंदा करते हैं	और हम मौत देते हैं	और हम ही	वारिस हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	जान लिया हमने

الْمُسْتَقْدِمِيْنَ	مِنْكُمْ	وَلَقَدْ	عَلِمْنَا	الْمُسْتَاْخِرِيْنَ (24)	وَاِنَّ
आगे बढ़ने वालों को	तुम में से	और अलबत्ता तहक़ीक़	जान लिया हमने	पीछे रहने वालों को	और बेशक

ع 2 10 2

رَبَّكَ	هُوَ	يَحْشُرُهُمْ ؕ	اِنَّهٗ	حَكِيْمٌ	عَلِيْمٌ (25) ع	وَلَقَدْ
रब आपका	वो	वो इकट्ठा करेगा उन्हें	बेशक वो ही है	बहुत हिक्मत वाला	ख़ूब इल्म वाला	और अलबत्ता तहक़ीक़

خَلَقْنَا	الْاِنْسَانَ	مِنْ صَلْصَالٍ	مِّنْ حَمَاٍ	مَّسْنُوْنٍ (26) ج	وَالْجَآنَّ
पैदा किया हमने	इंसान को	खनकती मिट्टी से	कीचड़ से	बदबूदार	और जिन्न को

خَلَقْنٰهُ	مِنْ قَبْلُ	مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ (27)	وَاِذْ	قَالَ	رَبُّكَ
पैदा किया हमने उसे	इससे क़ब्ल	आग की लपट से	और जब	फ़रमाया	आपके रब ने

لِلْمَلٰٓئِكَةِ	اِنِّيْ	خَالِقٌۢ	بَشَرًا	مِّنْ صَلْصَالٍ	مِّنْ حَمَاٍ
फ़रिश्तों से	बेशक मैं	पैदा करने वाला हूं	एक इंसान	खनकती मिट्टी से	कीचड़ से

مَّسْنُوْنٍ (28)	فَاِذَا	سَوَّيْتُهٗ	وَنَفَخْتُ	فِيْهِ	مِنْ رُّوْحِيْ	فَقَعُوْا
बदबूदार	फिर जब	दुरुस्त कर दूं मैं उसे	और फूंक दूं मैं	उसमें	अपनी रूह से	तो गिर पड़ना

لَهٗ	سٰجِدِيْنَ (29)	فَسَجَدَ	الْمَلٰٓئِكَةُ	كُلُّهُمْ	اَجْمَعُوْنَ (30) لا
उसके लिए	सज्दा करते हुए	तो सज्दा किया	फ़रिश्तों ने	सबके सब ने	इकट्ठे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَّآ	اِبْلِيْسَ ؕ	اَبٰٓى	اَنْ	يَّكُوْنَ	مَعَ	السّٰجِدِيْنَ (31)	قَالَ
सिवाए	इब्लीस के	उसने इंकार किया	कि	हो वो	साथ	सज्दा करने वालों के	फ़रमाया

يٰٓاِبْلِيْسُ	مَا	لَكَ	اَلَّا	تَكُوْنَ	مَعَ السّٰجِدِيْنَ (32)	قَالَ
ऐ इब्लीस	क्या है	तुझे	कि नहीं	हुआ तू	साथ सज्दा करने वालों के	उसने कहा

لَمْ	اَكُنْ	لِّاَسْجُدَ	لِبَشَرٍ	خَلَقْتَهٗ	مِنْ صَلْصَالٍ	مِّنْ حَمَاٍ
नहीं	हूं मैं	कि मैं सज्दा करूं	ऐसे इंसान को	बनाया तूने उसे	खनकती मिट्टी से	कीचड़ से

مَّسْنُوْنٍ (33)	قَالَ	فَاخْرُجْ	مِنْهَا	فَاِنَّكَ	رَجِيْمٌ (34) لا	وَّاِنَّ
बदबूदार	फ़रमाया	पस निकल जा	इससे	पस बेशक तू	मरदूद है	और बेशक

عَلَيْكَ	اللَّعْنَةَ	اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ (35)	قَالَ	رَبِّ	فَاَنْظِرْنِيْٓ
तुझ पर	लानत है	बदले के दिन तक	वो बोला	ऐ मेरे रब	पस मोहलत दे मुझे

اِلٰى يَوْمِ	يُبْعَثُوْنَ (36)	قَالَ	فَاِنَّكَ	مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ (37) لا	اِلٰى يَوْمِ
उस दिन तक	(कि) वो सब उठाए जाएंगे	फ़रमाया	पस बेशक तू	मोहलत दिए जाने वालों में से है	उस दिन तक

الْوَقْتِ	الْمَعْلُوْمِ (38)	قَالَ	رَبِّ	بِمَآ	اَغْوَيْتَنِيْ
(जिस का) वक़्त	मालूम/मुक़र्रर है	उसने कहा	ऐ मेरे रब	बवजह उसके जो	बेराह किया तूने मुझे

لَاُزَيِّنَنَّ	لَهُمْ	فِي الْاَرْضِ	وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ	اَجْمَعِيْنَ (39) لا	اِلَّا
अलबत्ता मैं ज़रूर मुज़य्यन कर दूंगा	उनके लिए	ज़मीन में	अलबत्ता मैं ज़रूर बहकाऊंगा उनको	सबके सबको	सिवाए

عِبَادَكَ	مِنْهُمُ	الْمُخْلَصِيْنَ (40)	قَالَ	هٰذَا	صِرَاطٌ	عَلَيَّ
तेरे बंदों के	उनमें से	जो चुने हुए हैं	फ़रमाया	ये	रास्ता है	मुझ तक

مُسْتَقِيْمٌ (41)	اِنَّ	عِبَادِيْ	لَيْسَ	لَكَ	عَلَيْهِمْ	سُلْطٰنٌ
सीधा	बेशक	मेरे बंदे	नहीं	तेरे लिए	उन पर	कोई ज़ोर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جَهَنَّمَ	وَاِنَّ	مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿42﴾	اتَّبَعَكَ	مَنِ	اِلَّا
जहन्नम	और बेशक	बहके हुओं में से	पैरवी करे तेरी	जो	मगर

لِكُلِّ	اَبْوَابٍ ؕ	سَبْعَةُ	لَهَا	اَجْمَعِيْنَ ﴿43﴾ قف لا	لَمَوْعِدُهُمْ
वास्ते हर	दरवाज़े हैं	सात	उसके	सबके सबकी	अलबत्ता उनके वादे की जगह है

ع 3 19 3

فِيْ جَنّٰتٍ	الْمُتَّقِيْنَ	اِنَّ	مَّقْسُوْمٌ ﴿44﴾ ع	جُزْءٌ	مِّنْهُمْ	بَابٍ
बाग़ों में होंगे	मुत्तक़ी लोग	बेशक	तक़्सीम शुदा	एक हिस्सा है	उनमें से	दरवाज़े के

مَا	وَنَزَعْنَا	اٰمِنِيْنَ ﴿46﴾	بِسَلٰمٍ	اُدْخُلُوْهَا	وَّعُيُوْنٍ ﴿45﴾ ؕ
जो भी	और निकाल देंगे हम	अमन से रहने वाले	साथ सलामती के	दाख़िल हो जाओ इनमें	और चश्मों में

مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿47﴾	عَلٰى سُرُرٍ	اِخْوَانًا	مِّنْ غِلٍّ	فِيْ صُدُوْرِهِمْ
आमने-सामने (होंगे)	तख़्तों पर	भाई-भाई बनकर	कोई कीना	उनके सीनों में है

بِمُخْرَجِيْنَ ﴿48﴾	مِّنْهَا	هُمْ	وَّمَا	نَصَبٌ	فِيْهَا	لَا يَمَسُّهُمْ
निकाले जाऐंगे	उनसे	वो	और ना	कोई थकावट	उनमें	ना छुएगी उन्हें

وَاَنَّ	الرَّحِيْمُ ﴿49﴾ لا	الْغَفُوْرُ	اَنَا	اَنِّيْٓ	عِبَادِيْٓ	نَبِّئْ
और बेशक	बहुत रहम करने वाला	बहुत बख़्शने वाला	मैं ही हूं	बेशक मैं	मेरे बंदों को	ख़बर दे दीजिए

عَنْ ضَيْفِ	وَنَبِّئْهُمْ	الْاَلِيْمُ ﴿50﴾	الْعَذَابُ	هُوَ	عَذَابِيْ
मेहमानों की	और ख़बर दे दीजिए उन्हें	दर्दनाक	अज़ाब है	वो ही	अज़ाब मेरा

وقف لازم

قَالَ	سَلٰمًا ؕ	فَقَالُوْا	عَلَيْهِ	دَخَلُوْا	اِذْ	اِبْرٰهِيْمَ ﴿51﴾ ؕ
उसने कहा	सलाम (हो तुम पर)	तो उन्होंने कहा	उस पर	वो दाख़िल हुए	जब	इब्राहीम के

نُبَشِّرُكَ	اِنَّا	لَا تَوْجَلْ	قَالُوْا	وَجِلُوْنَ ﴿52﴾	مِنْكُمْ	اِنَّا
हम ख़ुशख़बरी देते हैं तुझे	बेशक हम	ना तुम डरो	उन्होंने कहा	ख़ौफ़ज़दा हैं	तुम से	बेशक हम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِغُلٰمٍ	عَلِيْمٍ (53)	قَالَ	اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ	عَلٰٓى	اَنْ	مَّسَّنِيَ
एक लड़के की	बहुत इल्म वाले	उसने कहा	क्या ख़ुशख़बरी देते हो तुम मुझे	बावजूद इसके	कि	पहुंच चुका मुझे

الْكِبَرُ	فَبِمَ	تُبَشِّرُوْنَ (54)	قَالُوْا	بَشَّرْنٰكَ	بِالْحَقِّ	فَلَا
बुढ़ापा	पस किस चीज़ की	तुम ख़ुशख़बरी देते हो	उन्होंने कहा	ख़ुशख़बरी दी है हमने तुझे	हक़ की	पस ना

تَكُنْ	مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ (55)	قَالَ	وَمَنْ	يَّقْنَطُ	مِنْ رَّحْمَةِ
तुम हो	मायूस होने वालों में से	उसने कहा	और कौन	मायूस हो सकता है	रहमत से

رَبِّهٖٓ	اِلَّا	الضَّآلُّوْنَ (56)	قَالَ	فَمَا	خَطْبُكُمْ	اَيُّهَا
अपने रब की	सिवाए	गुमराह लोगों के	उसने कहा	तो क्या	मामला है तुम्हारा	ऐ

الْمُرْسَلُوْنَ (57)	قَالُوْٓا	اِنَّآ	اُرْسِلْنَآ	اِلٰى قَوْمٍ	مُّجْرِمِيْنَ (58)
भेजे हुओ (फ़रिश्तो)	उन्होंने कहा	बेशक हम	भेजे गए हम	तरफ़ उन लोगों के	जो मुजरिम हैं

اِلَّآ	اٰلَ لُوْطٍ	اِنَّا	لَمُنَجُّوْهُمْ	اَجْمَعِيْنَ (59)	اِلَّا	امْرَاَتَهٗ
सिवाए	आले लूत के	बेशक हम	अलबत्ता निजात देने वाले हैं उनको	सबके सबको	सिवाए	उसकी बीवी के

قَدَّرْنَآ	اِنَّهَا	لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ (60)	فَلَمَّا	جَآءَ	اٰلَ لُوْطِ	ع 4 16 4
मुक़द्दर कर दिया हमने	बेशक वो	अलबत्ता पीछे रहने वालों में से है	तो जब	आ गए	आले लूत (के पास)	

الْمُرْسَلُوْنَ (61)	قَالَ	اِنَّكُمْ	قَوْمٌ	مُّنْكَرُوْنَ (62)	قَالُوْا	بَلْ
भेजे हुए (फ़रिश्ते)	उसने कहा	बेशक तुम	एक क़ौम हो	अजनबी	उन्होंने कहा	बल्कि

جِئْنٰكَ	بِمَا	كَانُوْا	فِيْهِ	يَمْتَرُوْنَ (63)	وَاَتَيْنٰكَ
लाए हैं हम तेरे पास	वो जो	थे वो	जिसमें	वो शक करते	और लाए हैं हम तेरे पास

بِالْحَقِّ	وَاِنَّا	لَصٰدِقُوْنَ (64)	فَاَسْرِ	بِاَهْلِكَ	بِقِطْعٍ
हक़ को	और बेशक हम	अलबत्ता सच्चे हैं	पस ले चलो	अपने घर वालों को	एक हिस्से में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنَ الَّيْلِ	وَاتَّبِعْ	اَدْبَارَهُمْ	وَلَا	يَلْتَفِتْ	مِنْكُمْ	اَحَدٌ
रात के	और चलते चलो	पीछे उनके	और ना	पीछे मुड़कर देखे	तुममें से	कोई एक भी

وَّامْضُوْا	حَيْثُ	تُؤْمَرُوْنَ (65)	وَقَضَيْنَآ	اِلَيْهِ	ذٰلِكَ	الْاَمْرَ
और चलते जाओ	जहां का	तुम हुक्म दिए जाते हो	और फ़ैसला पहुंचा दिया हमने	तरफ़ उसके	उस	मामले का

اَنَّ	دَابِرَ	هٰٓؤُلَآءِ	مَقْطُوْعٌ	مُّصْبِحِيْنَ (66)	وَجَآءَ
बेशक	जड़	उन लोगों की	काट दी जाएगी	जबकि वो सुबह करने वाले होंगे	और आ गए

اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ	يَسْتَبْشِرُوْنَ (67)	قَالَ	اِنَّ	هٰٓؤُلَآءِ	ضَيْفِيْ
शहर वाले	ख़ुशियां मनाते हुए	(लूत ने) कहा	बेशक	ये लोग	मेहमान हैं मेरे

فَلَا	تَفْضَحُوْنِ (68)	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَلَا	تُخْزُوْنِ (69)	قَالُوْٓا
पस ना	तुम रुस्वा करो मुझे	और डरो	अल्लाह से	और ना	तुम ज़लील करो मुझे	उन्होंने कहा

اَوَلَمْ	نَنْهَكَ	عَنِ الْعٰلَمِيْنَ (70)	قَالَ	هٰٓؤُلَآءِ	بَنٰتِيْٓ	اِنْ
क्या भला नहीं	हमने रोका था तुझे	तमाम जहान वालों से	उसने कहा	ये	बेटियां हैं मेरी	अगर

كُنْتُمْ	فٰعِلِيْنَ (71)	لَعَمْرُكَ	اِنَّهُمْ	لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ	يَعْمَهُوْنَ (72)
हो तुम	करने वाले	आपकी ज़िंदगी की क़सम	बेशक वो	अलबत्ता अपने नशे में	वो बहक रहे थे

فَاَخَذَتْهُمُ	الصَّيْحَةُ	مُشْرِقِيْنَ (73)	فَجَعَلْنَا	عَالِيَهَا	سَافِلَهَا
तो पकड़ लिया उन्हें	एक चिंघाड़ ने	सूरज तुलू होते वक़्त	तो कर दिया हमने	ऊपर वाला उसका	निचला उसका

وَاَمْطَرْنَا	عَلَيْهِمْ	حِجَارَةً	مِّنْ سِجِّيْلٍ (74)	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
और बरसाए हमने	उन पर	पत्थर	पकी हुई मिट्टी के	बेशक	इसमें

لَاٰيٰتٍ	لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ (75)	وَاِنَّهَا	لَبِسَبِيْلٍ	مُّقِيْمٍ (76)	اِنَّ
अलबत्ता निशानियां हैं	गहरी नज़र से देखने वालों के लिए	और बेशक वो	अलबत्ता ऐसे रास्ते पर है	जो क़ायम है	बेशक

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿77﴾ ط	وَاِنْ	كَانَ	اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ
इसमें	अलबत्ता एक निशानी है	ईमान वालों के लिए	और बेशक	थे	ऐका/जंगल वाले

لَظٰلِمِيْنَ ﴿78﴾ لا	فَانْتَقَمْنَا	مِنْهُمْ	وَاِنَّهُمَا	لَبِاِمَامٍ	مُّبِيْنٍ ﴿79﴾ ط ع	وقف لازم ع 5 19 5
अलबत्ता ज़ालिम	तो इंतिक़ाम लिया हमने	उनसे	और बेशक वो दोनों हैं	अलबत्ता रास्ते पर	वाज़ेह	

وَلَقَدْ	كَذَّبَ	اَصْحٰبُ الْحِجْرِ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿80﴾ لا	وَاٰتَيْنٰهُمْ
और अलबत्ता तहक़ीक़	झुठलाया	हिज्र वालों ने	रसूलों को	और दीं हमने उन्हें

اٰيٰتِنَا	فَكَانُوْا	عَنْهَا	مُعْرِضِيْنَ ﴿81﴾ لا	وَكَانُوْا	يَنْحِتُوْنَ
अपनी निशानियां	तो थे वो	उनसे	ऐराज़ करने वाले	और थे वो	वो तराशते

مِنَ الْجِبَالِ	بُيُوْتًا	اٰمِنِيْنَ ﴿82﴾	فَاَخَذَتْهُمُ	الصَّيْحَةُ
पहाड़ों से	घरों को	अमन से रहने वाले	तो पकड़ लिया उन्हें	चिंघाड़ ने

مُصْبِحِيْنَ ﴿83﴾ لا	فَمَآ	اَغْنٰى	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَكْسِبُوْنَ ﴿84﴾ ط
जबकि वो सुबह करने वाले थे	तो ना	काम आया	उन्हें	जो कुछ	थे वो	वो कमाई करते

وَمَا	خَلَقْنَا	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	وَمَا	بَيْنَهُمَآ	اِلَّا	بِالْحَقِّ ط
और नहीं	पैदा किया हमने	आसमानों	और ज़मीन को	और जो	दर्मियान है इन दोनों के	मगर	साथ हक़ के

وَاِنَّ	السَّاعَةَ	لَاٰتِيَةٌ	فَاصْفَحِ	الصَّفْحَ	الْجَمِيْلَ ﴿85﴾
और बेशक	क़यामत	ज़रूर आने वाली है	पस दरगुज़र कीजिए	दरगुज़र करना	ख़ूबसूरती से

اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	الْخَلّٰقُ	الْعَلِيْمُ ﴿86﴾	وَلَقَدْ	اٰتَيْنٰكَ
बेशक	रब आपका	वो ही है	ख़ूब पैदा करने वाला	ख़ूब जानने वाला	और अलबत्ता तहक़ीक़	दीं हमने आपको

سَبْعًا	مِّنَ الْمَثَانِيْ	وَالْقُرْاٰنَ	الْعَظِيْمَ ﴿87﴾	لَا تَمُدَّنَّ
सात	दोहराई जाने वाली (आयात)	और क़ुरआने	अज़ीम	हरगिज़ ना आप दराज़ कीजिए

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَيْنَيْكَ	اِلٰى مَا	مَتَّعْنَا	بِهٖ	اَزْوَاجًا	مِّنْهُمْ	وَلَا
अपनी दोनों आंखें	तरफ़ उसके जो	फ़ायदा दिया हमने	साथ जिसके	मुख़्तलिफ़ लोगों को	उनमें से	और ना

تَحْزَنْ	عَلَيْهِمْ	وَاخْفِضْ	جَنَاحَكَ	لِلْمُؤْمِنِيْنَ (88)	وَقُلْ	اِنِّيْ
आप ग़म कीजिए	उन पर	और झुका लीजिए	बाज़ू अपना	मोमिनों के लिए	और कह दीजिए	बेशक मैं

اَنَا	النَّذِيْرُ	الْمُبِيْنُ (89) ج	كَمَآ	اَنْزَلْنَا	عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ (90) لا	الَّذِيْنَ
मैं तो	डराने वाला हूं	खुल्लम-खुल्ला	जैसा कि	नाज़िल किया हमने	तक़्सीम करने वालों पर	वो जिन्होंने

جَعَلُوا	الْقُرْاٰنَ	عِضِيْنَ (91)	فَوَرَبِّكَ	لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ
कर दिया	क़ुरआन को	टुकड़े-टुकड़े	पस क़सम है आपके रब की	अलबत्ता हम ज़रूर सवाल करेंगे उनसे

الربع

اَجْمَعِيْنَ (92) لا	عَمَّا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (93) الربع	فَاصْدَعْ	بِمَا
सबके-सबसे	उस चीज़ के बारे में जो	थे वो	वो अमल करते	पस आप खुल्लम-खुल्ला सुना दीजिए	जिसका

تُؤْمَرُ	وَاَعْرِضْ	عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ (94)	اِنَّا	كَفَيْنٰكَ
आप हुक्म दिए जाते हैं	और ऐराज़ कीजिए	मुशरिकों से	बेशक हम	काफ़ी हैं हम आपको

الْمُسْتَهْزِءِيْنَ (95) لا	الَّذِيْنَ	يَجْعَلُوْنَ	مَعَ	اللّٰهِ	اِلٰهًا	اٰخَرَ ج
मज़ाक़ उड़ाने वालों से	वो लोग जो	बना लेते हैं	साथ	अल्लाह के	इलाह	दूसरा

فَسَوْفَ	يَعْلَمُوْنَ (96)	وَلَقَدْ	نَعْلَمُ	اَنَّكَ	يَضِيْقُ
पस अनक़रीब	वो जान लेंगे	और अलबत्ता तहक़ीक़	हम जानते हैं	कि बेशक आप	तंग होता है

صَدْرُكَ	بِمَا	يَقُوْلُوْنَ (97) لا	فَسَبِّحْ	بِحَمْدِ	رَبِّكَ	وَكُنْ
सीना आपका	बवजह उसके जो	वो कहते हैं	पस तस्बीह कीजिए	साथ हम्द के	अपने रब की	और हो जाइए

ع 6 20 6

مِّنَ السّٰجِدِيْنَ (98) لا	وَاعْبُدْ	رَبَّكَ	حَتّٰى	يَاْتِيَكَ	الْيَقِيْنُ (99) ع
सज्दा करने वालों में से	और इबादत कीजिए	अपने रब की	यहां तक कि	आ जाए आपके पास	यक़ीन (मौत)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

آيَاتُهَا: 128 | 16 سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ 70 | رُكُوْعَاتُهَا: 16

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَتٰٓى	اَمْرُ	اللّٰهِ	فَلَا	تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ	سُبْحٰنَهٗ	وَتَعٰلٰى	عَمَّا
आ पहुंचा	हुक्म	अल्लाह का	पस ना	तुम जल्दी मांगो उसे	पाक है वो	और बुलंदतर है	उससे जो

يُشْرِكُوْنَ ①	يُنَزِّلُ	الْمَلٰٓئِكَةَ	بِالرُّوْحِ	مِنْ اَمْرِهٖ	عَلٰى مَنْ
वो शरीक ठहराते हैं	वो उतारता है	फ़रिश्तों को	साथ वही के	अपने हुक्म से	जिस पर

يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖٓ	اَنْ	اَنْذِرُوْٓا	اَنَّهٗ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّآ
वो चाहता है	अपने बंदों में से	कि	तुम डराओ (लोगों को)	कि बेशक वो	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर

اَنَا	فَاتَّقُوْنِ ②	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	بِالْحَقِّ ؕ	تَعٰلٰى
मैं ही	पस डरो मुझसे	उसने पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	साथ हक़ के	बुलंदतर है

عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ ③	خَلَقَ	الْاِنْسَانَ	مِنْ نُّطْفَةٍ	فَاِذَا	هُوَ
उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं	उसने पैदा किया	इंसान को	एक नुत्फ़े से	फिर अचानक	वो

خَصِيْمٌ	مُّبِيْنٌ ④	وَالْاَنْعَامَ	خَلَقَهَا ۚ	لَكُمْ	فِيْهَا
झगड़ालू है	खुल्लम-खुल्ला	और चौपाय	उसने पैदा किया उन्हें	तुम्हारे लिए	उनमें

دِفْءٌ	وَّمَنَافِعُ	وَمِنْهَا	تَاْكُلُوْنَ ⑤ ۖ	وَلَكُمْ	فِيْهَا	جَمَالٌ
गर्मी का सामान	और कई फ़ायदे हैं	और उनमें से	तुम खाते हो	और तुम्हारे लिए	उनमें	ख़ूबसूरती है

حِيْنَ	تُرِيْحُوْنَ	وَحِيْنَ	تَسْرَحُوْنَ ⑥ ۖ	وَتَحْمِلُ	اَثْقَالَكُمْ
जिस वक़्त	तुम शाम को चरा कर लाते हो	और जिस वक़्त	तुम सुबह चराने जाते हो	और वो उठा ले जाते हैं	बोझ तुम्हारे

اِلٰى بَلَدٍ	لَّمْ	تَكُوْنُوْا	بٰلِغِيْهِ	اِلَّا	بِشِقِّ	الْاَنْفُسِ ؕ
तरफ उस शहर के	ना	थे तुम	पहुंचने वाले उस तक	मगर	साथ मशक़्क़त के	जानों की

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنَّ	رَبَّكُمْ	لَرَءُوْفٌ	رَّحِيْمٌ ۙ ⑦	وَّالْخَيْلَ	وَالْبِغَالَ
बेशक	रब तुम्हारा	अलबत्ता बहुत शफ़क़त करने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और घोड़े	और ख़च्चर

وَالْحَمِيْرَ	لِتَرْكَبُوْهَا	وَزِيْنَةً ؕ	وَيَخْلُقُ	مَا	لَا	تَعْلَمُوْنَ ⑧
और गधे	ताकि तुम सवारी करो उन पर	और ज़ीनत भी हैं	और वो पैदा करेगा	जो	नहीं	तुम जानते

وَعَلَى اللّٰهِ	قَصْدُ	السَّبِيْلِ	وَمِنْهَا	جَآئِرٌ ؕ	وَلَوْ	شَآءَ
और अल्लाह ही पर है	सीधा	रास्ता	और उनमें से कुछ	टेढ़े हैं	और अगर	वो चाहता

ع 1 9 7

لَهَدٰىكُمْ	اَجْمَعِيْنَ ع ⑨	هُوَ	الَّذِيْٓ	اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً
अलबत्ता हिदायत दे देता तुम्हें	सबके सबको	वो ही है	जिसने	उतारा	आसमान से	पानी

لَّكُمْ	مِّنْهُ	شَرَابٌ	وَّمِنْهُ	شَجَرٌ	فِيْهِ	تُسِيْمُوْنَ ⑩
तुम्हारे लिए	उसमें से	पीना है	और उसमें से	दरख़्त है	जिसमें	तुम चराते हो

يُنْۢبِتُ	لَكُمْ	بِهِ	الزَّرْعَ	وَالزَّيْتُوْنَ	وَالنَّخِيْلَ
वो उगाता है	तुम्हारे लिए	साथ उसके	खेती	और ज़ैतून	और खजूर के दरख़्त

وَالْاَعْنَابَ	وَمِنْ كُلِّ	الثَّمَرٰتِ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً
और अंगूर	और हर क़िस्म में से	फलों की	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता एक निशानी है

لِّقَوْمٍ	يَّتَفَكَّرُوْنَ ⑪	وَسَخَّرَ	لَكُمُ	الَّيْلَ	وَالنَّهَارَ ۙ
उन लोगों के लिए	जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	और उसने मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	रात	और दिन को

وَالشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ ؕ	وَالنُّجُوْمُ	مُسَخَّرٰتٌۢ	بِاَمْرِهٖ ؕ	اِنَّ
और सूरज	और चांद को	और सितारे	मुसख़्ख़र किए गए हैं	उसके हुक्म से	बेशक

فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يَّعْقِلُوْنَ ۙ ⑫	وَمَا	ذَرَاَ	لَكُمْ
इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो अक़्ल रखते हैं	और जो कुछ	उसने फैला दिया	तुम्हारे लिए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِي الْاَرْضِ	مُخْتَلِفًا	اَلْوَانُهٗ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّقَوْمٍ
ज़मीन में	मुख़्तलिफ़ हैं	रंग उसके	यक़ीनन	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	उन लोगों के लिए

يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿13﴾	وَهُوَ	الَّذِيْ	سَخَّرَ	الْبَحْرَ	لِتَاْكُلُوْا	مِنْهُ
जो नसीहत पकड़ते हैं	और वो ही है	जिसने	मुसख़्ख़र किया	समुन्दर को	ताकि तुम खाओ	उससे

لَحْمًا	طَرِيًّا	وَّتَسْتَخْرِجُوْا	مِنْهُ	حِلْيَةً	تَلْبَسُوْنَهَا ۚ
गोश्त	ताज़ा	और तुम निकालो	उससे	ज़ेवर	तुम पहनते हो उसे

وَتَرَى	الْفُلْكَ	مَوَاخِرَ	فِيْهِ	وَلِتَبْتَغُوْا	مِنْ فَضْلِهٖ
और तुम देखते हो	कश्तियां	कि फाड़ने वाली हैं	उसमें	और ताकि तुम तलाश करो	उसके फ़ज़्ल में से

وَلَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ ﴿14﴾	وَاَلْقٰى	فِي الْاَرْضِ	رَوَاسِيَ	اَنْ
और ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	और उसने डाल दिए	ज़मीन में	पहाड़	कि

تَمِيْدَ	بِكُمْ	وَاَنْهٰرًا	وَّسُبُلًا	لَّعَلَّكُمْ	تَهْتَدُوْنَ ﴿15﴾ لا
(ना) वो ढुलक जाए	तुम्हें लेकर	और नहरें	और रास्ते	ताकि तुम	तुम हिदायत पा जाओ

وَعَلٰمٰتٍ ؕ	وَبِالنَّجْمِ	هُمْ	يَهْتَدُوْنَ ﴿16﴾	اَفَمَنْ	يَّخْلُقُ
और अलामात (रख दीं)	और साथ सितारों के	वो	वो राह पाते हैं	क्या भला वो जो	पैदा करता है

كَمَنْ	لَّا يَخْلُقُ ؕ	اَفَلَا	تَذَكَّرُوْنَ ﴿17﴾	وَاِنْ	تَعُدُّوْا	نِعْمَةَ
मानिंद उसके है जो	नहीं पैदा करता	क्या भला नहीं	तुम नसीहत पकड़ते	और अगर	तुम गिनना चाहो	नेअमतों को

اللّٰهِ	لَا تُحْصُوْهَا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَغَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿18﴾	وَاللّٰهُ
अल्लाह की	नहीं तुम शुमार कर सकते उन्हें	बेशक	अल्लाह	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और अल्लाह

يَعْلَمُ	مَا	تُسِرُّوْنَ	وَمَا	تُعْلِنُوْنَ ﴿19﴾	وَالَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ
जानता है	जो कुछ	तुम छुपाते हो	और जो कुछ	तुम ज़ाहिर करते हो	और जिन्हें	वो पुकारते हैं

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	لَا يَخْلُقُوْنَ	شَيْـًٔا	وَّهُمْ	يُخْلَقُوْنَ ﴿20﴾ ط	اَمْوَاتٌ
सिवाए	अल्लाह के	नहीं वो पैदा कर सकते	कोई चीज़	और वो	वो पैदा किए जाते हैं	मुर्दे हैं

ع 2 12 8

غَيْرُ اَحْيَآءٍ ج	وَمَا	يَشْعُرُوْنَ لا	اَيَّانَ	يُبْعَثُوْنَ ﴿21﴾ ع	اِلٰهُكُمْ	اِلٰهٌ
ज़िंदा नहीं हैं	और नहीं	वो शऊर रखते	कि कब	वो उठाए जाएंगे	इलाह तुम्हारा	इलाह है

وَّاحِدٌ ج	فَالَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ	قُلُوْبُهُمْ	مُّنْكِرَةٌ
एक ही	तो वो लोग जो	नहीं ईमान लाते	आख़िरत पर	दिल उनके	इंकारी हैं

وَّهُمْ	مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿22﴾	لَا جَرَمَ	اَنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	مَا	يُسِرُّوْنَ
और वो	तकब्बुर करने वाले हैं	नहीं कोई शक	यक़ीनन	अल्लाह	जानता है	जो कुछ	वो छुपाते हैं

وَمَا	يُعْلِنُوْنَ ط	اِنَّهٗ	لَا يُحِبُّ	الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿23﴾	وَاِذَا	قِيْلَ
और जो कुछ	वो ज़ाहिर करते हैं	बेशक वो	नहीं वो पसंद करता	तकब्बुर करने वालों को	और जब	कहा जाता है

لَهُمْ	مَّاذَآ	اَنْزَلَ	رَبُّكُمْ لا	قَالُوْٓا	اَسَاطِيْرُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿24﴾ لا
उन्हें	क्या कुछ	उतारा	तुम्हारे रब ने	वो कहते हैं	कहानियां हैं	पहलों की

لِيَحْمِلُوْٓا	اَوْزَارَهُمْ	كَامِلَةً	يَّوْمَ	الْقِيٰمَةِ لا	وَمِنْ اَوْزَارِ
ताकि वो उठा लें	बोझ अपने	पूरे	दिन	क़यामत के	और कुछ बोझ

ع 3 4 9

الَّذِيْنَ	يُضِلُّوْنَهُمْ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ط	اَلَا	سَآءَ	مَا	يَزِرُوْنَ ﴿25﴾ ع
उन लोगों के भी	वो गुमराह कर रहे हैं जिन्हें	बग़ैर	इल्म के	ख़बरदार	कितना बुरा है	जो	बोझ वो उठा रहे हैं

قَدْ	مَكَرَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	فَاَتَى	اللّٰهُ	بُنْيَانَهُمْ
तहक़ीक़	चाल चली	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	तो आया	अल्लाह	उनकी इमारत को

مِّنَ الْقَوَاعِدِ	فَخَرَّ	عَلَيْهِمُ	السَّقْفُ	مِنْ فَوْقِهِمْ	وَاَتٰىهُمُ
बुनियादों से	तो गिर पड़ी	उन्हीं पर	छत	उनके ऊपर से	और आया उनके पास

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْعَذَابُ	مِنْ حَيْثُ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿26﴾	ثُمَّ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ
अज़ाब	जहां से	नहीं वो शऊर रखते थे	फिर	दिन	क़यामत के

يُخْزِيْهِمْ	وَيَقُوْلُ	اَيْنَ	شُرَكَآءِيَ	الَّذِيْنَ	كُنْتُمْ	تُشَآقُّوْنَ
वो रुस्वा करेगा उन्हें	और वो कहेगा	कहां हैं	शरीक मेरे	वो जो	थे तुम	तुम झगड़ते

فِيْهِمْ ؕ	قَالَ	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْعِلْمَ	اِنَّ	الْخِزْيَ	الْيَوْمَ
जिन (के बारे) में	कहेंगे	वो लोग जो	दिए गए	इल्म	बेशक	रुस्वाई	आज के दिन

وَالسُّوْٓءَ	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿27﴾ لا	الَّذِيْنَ	تَتَوَفّٰىهُمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ
और बुराई	काफ़िरों पर है	वो लोग जो	फ़ौत करते हैं उन्हें	फ़रिश्ते

ظَالِمِيْٓ	اَنْفُسِهِمْ ۪	فَاَلْقَوُا	السَّلَمَ	مَا كُنَّا	نَعْمَلُ
(जबकि वो) ज़ुल्म करने वाले हैं	अपनी जानों पर	तो वो पेश करते हैं	सिपर/सुलह	(कहते हैं) ना थे हम	हम करते

مِنْ سُوْٓءٍ ؕ	بَلٰٓى	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌۢ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿28﴾
कोई बुराई	क्यों नहीं	बेशक	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	उसे जो	थे तुम	तुम अमल करते

فَادْخُلُوْٓا	اَبْوَابَ	جَهَنَّمَ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	فَلَبِئْسَ	مَثْوَى
पस दाख़िल हो जाओ	दरवाज़ो में	जहन्नम के	हमेशा रहने वाले	उसमें	पस अलबत्ता कितना बुरा है	ठिकाना

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿29﴾	وَقِيْلَ	لِلَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	مَاذَآ	اَنْزَلَ	رَبُّكُمْ ؕ
तकब्बुर करने वालों का	और कहा जाता है	उनसे जिन्होंने	तक़वा किया	क्या कुछ	उतारा	तुम्हारे रब ने

قَالُوْا	خَيْرًا ؕ	لِلَّذِيْنَ	اَحْسَنُوْا	فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا	حَسَنَةٌ ؕ
वो कहते हैं	बहुत अच्छा	उनके लिए जिन्होंने	अच्छा किया	इस दुनिया में	भलाई है

وَلَدَارُ	الْاٰخِرَةِ	خَيْرٌ ؕ	وَلَنِعْمَ	دَارُ	الْمُتَّقِيْنَ ﴿30﴾ لا	جَنّٰتُ
और अलबत्ता घर	आख़िरत का	बेहतर है	और अलबत्ता कितना अच्छा है	घर	मुत्तक़ीन का	बाग़ात

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَدْنٍ	يَّدْخُلُوْنَهَا	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	لَهُمْ	فِيْهَا
हमेशगी के	वो दाख़िल होंगे उनमें	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	उनके लिए	उसमें होगा

مَا	يَشَآءُوْنَ ؕ	كَذٰلِكَ	يَجْزِي	اللّٰهُ	الْمُتَّقِيْنَ ﴿31﴾ لا	الَّذِيْنَ
जो कुछ	वो चाहेंगे	इसी तरह	बदला देगा	अल्लाह	मुत्तक़ी लोगों को	वो लोग जो

تَتَوَفّٰىهُمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ	طَيِّبِيْنَ لا	يَقُوْلُوْنَ	سَلٰمٌ	عَلَيْكُمُ لا
फ़ौत करते हैं उन्हें	फ़रिश्ते	(इस हाल में कि) वो पाक होते हैं	वो कहते हैं	सलाम है	तुम पर

ادْخُلُوا	الْجَنَّةَ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿32﴾	هَلْ	يَنْظُرُوْنَ
दाख़िल हो जाओ	जन्नत में	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम अमल करते	नहीं	वो इंतिज़ार कर रहे

اِلَّآ	اَنْ	تَاْتِيَهُمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ	اَوْ	يَاْتِيَ	اَمْرُ	رَبِّكَ ؕ
मगर	ये कि	आ जाऐं उनके पास	फ़रिश्ते	या	आ जाए	हुक्म	आपके रब का

كَذٰلِكَ	فَعَلَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	وَمَا	ظَلَمَهُمُ	اللّٰهُ
इसी तरह	किया	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	और नहीं	ज़ुल्म किया था उन पर	अल्लाह ने

وَلٰكِنْ	كَانُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	يَظْلِمُوْنَ ﴿33﴾	فَاَصَابَهُمْ	سَيِّاٰتُ	مَا
और लेकिन	थे वो	अपनी ही जानों पर	वो ज़ुल्म करते	तो पहुंचीं उन्हें	बुराईयां	उसकी जो

عَمِلُوْا	وَحَاقَ	بِهِمْ	مَّا	كَانُوْا	بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿34﴾ ع
उन्होंने अमल किए थे	और घेर लिया	उन्हें	जो	थे वो	जिसका	वो मज़ाक़ उड़ाते

ع 4 9 10

وَقَالَ	الَّذِيْنَ	اَشْرَكُوْا	لَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	مَا	عَبَدْنَا
और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	शिर्क किया	अगर	चाहता	अल्लाह	ना	इबादत करते हम

مِنْ دُوْنِهٖ	مِنْ شَيْءٍ	نَّحْنُ	وَلَآ	اٰبَآؤُنَا	وَلَا	حَرَّمْنَا
उसके सिवा	किसी चीज़ की	हम	और ना	आबा ओ अजदाद हमारे	और ना	हराम करते हम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ دُوْنِهٖ	مِنْ شَيْءٍ ؕ	كَذٰلِكَ	فَعَلَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
उसके (हुक्म) के सिवा	किसी चीज़ को	इसी तरह	किया था	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे

فَهَلْ	عَلَى الرُّسُلِ	اِلَّا	الْبَلٰغُ	الْمُبِيْنُ (35)	وَلَقَدْ	بَعَثْنَا
तो नहीं है	रसूलों पर	मगर	पहुंचाना	खुल्लम-खुल्ला	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने

فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ	رَّسُوْلًا	اَنِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	وَاجْتَنِبُوا	الطَّاغُوْتَ ۚ
हर उम्मत में	एक रसूल	कि	इबादत करो	अल्लाह की	और बचो	ताग़ूत से

فَمِنْهُمْ	مَّنْ	هَدٰى	اللّٰهُ	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	حَقَّتْ	عَلَيْهِ
तो बाज़ उनमें से थे	जिन्हें	हिदायत दी	अल्लाह ने	और बाज़ उनमें से थे	वो जो	साबित हो गई	उन पर

الضَّلٰلَةُ ؕ	فَسِيْرُوْا	فِي الْاَرْضِ	فَانْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ
गुमराही	पस चलो फिरो	ज़मीन में	फिर देखो	किस तरह	हुआ	अंजाम

الْمُكَذِّبِيْنَ (36)	اِنْ	تَحْرِصْ	عَلٰى هُدٰىهُمْ	فَاِنَّ	اللّٰهَ
झुठलाने वालों का	अगर	आप हरीस हैं	उनकी हिदायत पर	तो बेशक	अल्लाह

لَا يَهْدِيْ	مَنْ	يُّضِلُّ	وَمَا	لَهُمْ	مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (37)
नहीं हिदायत देता	उसको जिसे	वो गुमराह करता है	और नहीं	उनके लिए	मददगारों में से कोई

وَاَقْسَمُوْا	بِاللّٰهِ	جَهْدَ	اَيْمَانِهِمْ ۙ	لَا يَبْعَثُ	اللّٰهُ	مَنْ
और वो क़समें खाते हैं	अल्लाह की	पक्की	क़समें अपनी	नहीं उठाएगा	अल्लाह	उसे जो

يَّمُوْتُ ؕ	بَلٰى	وَعْدًا	عَلَيْهِ	حَقًّا	وَّلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ
मर जाता है	क्यों नहीं	वादा है	उसके ज़िम्मे	सच्चा	और लेकिन	अक्सर	लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ (38) ۙ	لِيُبَيِّنَ	لَهُمُ	الَّذِيْ	يَخْتَلِفُوْنَ	فِيْهِ
नहीं वो इल्म रखते	ताकि वो बयान करे	उनके लिए	वो चीज़ जो	वो इख़्तिलाफ़ करते हैं	जिसमें

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلِيَعْلَمَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اَنَّهُمْ	كَانُوْا	كٰذِبِيْنَ ﴿39﴾	اِنَّمَا
और ताकि जान लें	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	बेशक वो	थे वो	झूठे	बेशक

قَوْلُنَا	لِشَيْءٍ	اِذَآ	اَرَدْنٰهُ	اَنْ	نَّقُوْلَ	لَهٗ	كُنْ
कहना हमारा	किसी चीज़ के लिए	जब	इरादा करते हैं हम उसका	ये कि	हम कहते है	उसे	हो जा

فَيَكُوْنُ ﴿40﴾ ع	وَالَّذِيْنَ	هَاجَرُوْا	فِي اللّٰهِ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	ظُلِمُوْا
तो वो हो जाती है	और वो जिन्होंने	हिजरत की	अल्लाह की राह में	बाद उसके	जो	वो ज़ुल्म किए गए

ع 5 6 11

لَنُبَوِّئَنَّهُمْ	فِي الدُّنْيَا	حَسَنَةً ؕ	وَلَاَجْرُ	الْاٰخِرَةِ	اَكْبَرُ ۘ
अलबत्ता हम जरूर ठिकाना देंगे उन्हें	दुनिया में	अच्छा	और यक़ीनन अजर	आख़िरत का	सबसे बड़ा है

وقف لازم

لَوْ	كَانُوْا	يَعْلَمُوْنَ ﴿41﴾ لا	الَّذِيْنَ	صَبَرُوْا	وَعَلٰى رَبِّهِمْ
काश	होते वो	वो जानते	वो जिन्होंने	सब्र किया	और अपने रब पर ही

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿42﴾	وَمَآ	اَرْسَلْنَا	مِنْ قَبْلِكَ	اِلَّا	رِجَالًا	نُّوْحِيْٓ
वो भरोसा करते हैं	और नहीं	भेजा हमने	आपसे पहले	मगर	मर्दों को	हम वही करते थे

اِلَيْهِمْ	فَسْـَٔلُوْٓا	اَهْلَ الذِّكْرِ	اِنْ	كُنْتُمْ	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿43﴾ لا
तरफ़ उनके	पस पूछ लो	अहले इल्म से	अगर	हो तुम	नहीं तुम जानते

بِالْبَيِّنٰتِ	وَالزُّبُرِ ؕ	وَاَنْزَلْنَآ	اِلَيْكَ	الذِّكْرَ	لِتُبَيِّنَ	لِلنَّاسِ
साथ वाज़ेह दलाइल	और सहीफ़ों के	और नाज़िल किया हमने	तरफ़ आपके	ज़िक्र को	ताकि आप वाज़ेह करें	लोगों के लिए

النصف

مَا	نُزِّلَ	اِلَيْهِمْ	وَلَعَلَّهُمْ	يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿44﴾	اَفَاَمِنَ	الَّذِيْنَ
जो कुछ	नाज़िल किया गया	तरफ़ आपके	और ताकि वो	वो ग़ौरो फ़िक्र करें	क्या फिर बेख़ौफ़ हो गए	वो जिन्होंने

مَكَرُوا	السَّيِّاٰتِ	اَنْ	يَّخْسِفَ	اللّٰهُ	بِهِمُ	الْاَرْضَ	اَوْ
चालें चलीं	बुरी	कि	धंसा दे	अल्लाह	उन्हें	ज़मीन में	या

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَأْتِيَهُمُ	الْعَذَابُ	مِنْ حَيْثُ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿45﴾	اَوْ	يَأْخُذَهُمْ
आ जाए उनके पास	अज़ाब	जहां से	नहीं वो शऊर रखते	या	वो पकड़ ले उन्हें

فِيْ تَقَلُّبِهِمْ	فَمَا	هُمْ	بِمُعْجِزِيْنَ ﴿46﴾	اَوْ	يَأْخُذَهُمْ	عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ
उनके चलने फिरने में	तो नहीं	वो	आजिज़ करने वाले	या	वो पकड़ ले उन्हें	ख़ौफ़ज़दा होने पर

فَاِنَّ	رَبَّكُمْ	لَرَءُوْفٌ	رَّحِيْمٌ ﴿47﴾	اَوَ لَمْ	يَرَوْا	اِلٰى مَا
तो बेशक	रब तुम्हारा	अलबत्ता बहुत शफ़क़त करने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	क्या भला नहीं	वो देखते	तरफ़ उसके जो

خَلَقَ	اللّٰهُ	مِنْ شَيْءٍ	يَّتَفَيَّؤُا	ظِلٰلُهٗ	عَنِ الْيَمِيْنِ	وَالشَّمَآئِلِ
पैदा की	अल्लाह ने	कोई भी चीज़	झुकते हैं	साए उसके	दाएं से	और बाएं से

سُجَّدًا	لِّلّٰهِ	وَهُمْ	دٰخِرُوْنَ ﴿48﴾	وَلِلّٰهِ	يَسْجُدُ	مَا
सज्दा करते हुए	अल्लाह के लिए	इस हाल में कि वो	आजिज़ी करने वाले हैं	और अल्लाह ही के लिए	सज्दा करते हैं	जो

فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ	مِنْ دَآبَّةٍ	وَّالْمَلٰٓئِكَةُ	وَهُمْ
आसमानों में हैं	और जो	ज़मीन में हैं	जानदारों में से	और फ़रिश्ते	और वो

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿49﴾	يَخَافُوْنَ	رَبَّهُمْ	مِّنْ فَوْقِهِمْ	وَيَفْعَلُوْنَ	مَا
नहीं वो तकब्बुर करते	वो डरते हैं	अपने रब से	अपने ऊपर से	और वो करते हैं	जो

يُؤْمَرُوْنَ ﴿50﴾ السجدة ع	وَقَالَ	اللّٰهُ	لَا تَتَّخِذُوْٓا	اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ	اِنَّمَا	ع 6 10 12 السجدة 3
वो हुक्म दिए जाते हैं	और फ़रमाया	अल्लाह ने	ना तुम बनाओ	दो इलाह	बेशक	

هُوَ	اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ ۚ	فَاِيَّايَ	فَارْهَبُوْنِ ﴿51﴾	وَلَهٗ	مَا
वो	इलाह है	एक ही	तो सिर्फ़ मुझ ही से	पस डरो मुझसे	और उसी के लिए है	जो कुछ

فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَلَهُ	الدِّيْنُ	وَاصِبًا ؕ	اَفَغَيْرَ اللّٰهِ
आसमानों में	और ज़मीन में है	और उसी के लिए है	दीन	दायमी	क्या फिर ग़ैर अल्लाह से

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَتَّقُوْنَ ﴿52﴾	وَمَا	بِكُمْ	مِّنْ نِّعْمَةٍ	فَمِنَ اللّٰهِ	ثُمَّ	اِذَا
तुम डरते हो	और जो भी है	तुम्हारे पास	कोई नेअमत	पस अल्लाह की तरफ़ से है	फिर	जब

مَسَّكُمُ	الضُّرُّ	فَاِلَيْهِ	تَجْـَٔرُوْنَ ﴿53﴾ ج	ثُمَّ	اِذَا	كَشَفَ	الضُّرَّ
पहुंचती है तुम्हें	तकलीफ़	तो तरफ़ उसी के	तुम फ़रियाद करते हो	फिर	जब	वो हटा देता है	तकलीफ़ को

عَنْكُمْ	اِذَا	فَرِيْقٌ	مِّنْكُمْ	بِرَبِّهِمْ	يُشْرِكُوْنَ ﴿54﴾ لا	لِيَكْفُرُوْا
तुमसे	यकायक	एक गिरोह (के लोग)	तुम में से	साथ अपने रब के	वो शरीक ठहराते हैं	ताकि वो नाशुक्री करें

بِمَآ	اٰتَيْنٰهُمْ ط	فَتَمَتَّعُوْا قف	فَسَوْفَ	تَعْلَمُوْنَ ﴿55﴾	وَيَجْعَلُوْنَ	لِمَا
उसकी जो	दिया हमने उन्हें	तो तुम फ़ायदे उठा लो	पस अनक़रीब	तुम जान लोगे	और वो मुक़र्रर करते हैं	उसके लिए जो

لَا يَعْلَمُوْنَ	نَصِيْبًا	مِّمَّا	رَزَقْنٰهُمْ ط	تَاللّٰهِ	لَتُسْـَٔلُنَّ
नहीं वो जानते	एक हिस्सा	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	क़सम अल्लाह की	अलबत्ता तुम ज़रूर सवाल किए जाओगे

عَمَّا	كُنْتُمْ	تَفْتَرُوْنَ ﴿56﴾	وَيَجْعَلُوْنَ	لِلّٰهِ	الْبَنٰتِ
उसके बारे में जो	थे तुम	तुम गढ़ते	और वो बनाते हैं	अल्लाह के लिए	बेटियां

سُبْحٰنَهٗ لا	وَلَهُمْ	مَّا	يَشْتَهُوْنَ ﴿57﴾	وَاِذَا	بُشِّرَ	اَحَدُهُمْ
पाक है वो	और उनके लिए है	जो	वो ख़्वाहिश रखते हैं	और जब	ख़ुशख़बरी दी जाती है	उनमें से एक को

بِالْاُنْثٰى	ظَلَّ	وَجْهُهٗ	مُسْوَدًّا	وَّهُوَ	كَظِيْمٌ ﴿58﴾ ج	يَتَوَارٰى
लड़की की	हो जाता है	चेहरा उसका	स्याह	और वो	सख़्त ग़मगीन होता है	वो छुपता है

مِنَ الْقَوْمِ	مِنْ سُوْٓءِ	مَا	بُشِّرَ	بِهٖ ط	اَيُمْسِكُهٗ	عَلٰى هُوْنٍ
क़ौम से	बसबब आर के	जो	वो ख़ुशख़बरी दिया गया	जिस की	क्या वो रोके रखे उसे	साथ ज़िल्लत के

اَمْ	يَدُسُّهٗ	فِى التُّرَابِ ط	اَلَا	سَآءَ	مَا	يَحْكُمُوْنَ ﴿59﴾	لِلَّذِيْنَ
या	वो दबा दे उसे	मिट्टी में	ख़बरदार	कितना बुरा है	जो	वो फ़ैसला करते हैं	उन लोगों के लिए जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ	مَثَلُ	السَّوْءِ ج	وَلِلّٰهِ	الْمَثَلُ	الْاَعْلٰى ط
नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर	मिसाल है	बुरी	और अल्लाह के लिए	मिसाल है	आला

وَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ (60) ع	وَلَوْ	يُؤَاخِذُ	اللّٰهُ	النَّاسَ
और वो	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	और अगर	मुआख़िज़ा करे	अल्लाह	लोगों का

ع 7 10 13

بِظُلْمِهِمْ	مَّا	تَرَكَ	عَلَيْهَا	مِنْ دَآبَّةٍ	وَّلٰكِنْ	يُّؤَخِّرُهُمْ
बवजह उनके ज़ुल्म के	ना	वो छोड़े	इस (ज़मीन) पर	कोई जानदार	और लेकिन	वो मोहलत दे रहा है उन्हें

اِلٰٓى اَجَلٍ	مُّسَمًّى ج	فَاِذَا	جَآءَ	اَجَلُهُمْ	لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ	سَاعَةً
एक मुद्दत तक	मुक़र्रर	फिर जब	आ जाएगा	उनका वक़्ते मुक़र्रर	ना वो पीछे रहेंगे	एक घड़ी

وَّلَا	يَسْتَقْدِمُوْنَ (61)	وَيَجْعَلُوْنَ	لِلّٰهِ	مَا	يَكْرَهُوْنَ
और ना	वो आगे बढ़ सकेंगे	और वो मुक़र्रर करते हैं	अल्लाह के लिए	जो	वो (ख़ुद) नापसंद करते हैं

وَتَصِفُ	اَلْسِنَتُهُمُ	الْكَذِبَ	اَنَّ	لَهُمُ	الْحُسْنٰى ط	لَا جَرَمَ
और बयान करती हैं	ज़बानें उनकी	झूठ	कि बेशक	उनके लिए	भलाई है	नहीं कोई शक

اَنَّ	لَهُمُ	النَّارَ	وَاَنَّهُمْ	مُّفْرَطُوْنَ (62)	تَاللّٰهِ	لَقَدْ
यक़ीनन	उनके लिए	आग है	और यक़ीनन वो	आगे पहुंचाए जाने वाले हैं	क़सम अल्लाह की	अलबत्ता तहक़ीक़

اَرْسَلْنَآ	اِلٰٓى اُمَمٍ	مِّنْ قَبْلِكَ	فَزَيَّنَ	لَهُمُ	الشَّيْطٰنُ
भेजा हमने (रसूलों को)	तरफ़ कुछ क़ौमों के	आपसे पहले	तो मुज़य्यन कर दिया	उनके लिए	शैतान ने

اَعْمَالَهُمْ	فَهُوَ	وَلِيُّهُمُ	الْيَوْمَ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (63)
उनके आमाल को	पस वो ही	दोस्त है उनका	आज	और उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक

وَمَآ	اَنْزَلْنَا	عَلَيْكَ	الْكِتٰبَ	اِلَّا	لِتُبَيِّنَ	لَهُمُ	الَّذِى
और नहीं	नाज़िल किया हमने	आप पर	किताब को	मगर	ताकि आप वाज़ेह करें	उनके लिए	वो चीज़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اخْتَلَفُوْا	فِيْهِ ۙ	وَهُدًى	وَّرَحْمَةً	لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿64﴾	وَاللّٰهُ
उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया	जिसमें	और हिदायत	और रहमत	उन लोगों के लिए	जो ईमान रखते हैं	और अल्लाह ने

اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	فَاَحْيَا	بِهِ	الْاَرْضَ	بَعْدَ	مَوْتِهَا ؕ
उतारा	आसमान से	पानी	फिर ज़िंदा कर दिया	साथ उसके	ज़मीन को	बाद	उसकी मौत के

ع 8 5 14

اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّقَوْمٍ	يَّسْمَعُوْنَ ﴿65﴾ ع	وَاِنَّ	لَكُمْ
बेशक	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	उन लोगों के लिए	जो सुनते हैं	और बेशक	तुम्हारे लिए

فِي الْاَنْعَامِ	لَعِبْرَةً ؕ	نُسْقِيْكُمْ	مِّمَّا	فِيْ بُطُوْنِهٖ	مِنْۢ بَيْنِ
मवेशी जानवरों में	अलबत्ता इबरत है	हम पिलाते हैं तुम्हें	उसमें से जो	उनके पेटों में है	दर्मियान

فَرْثٍ	وَّدَمٍ	لَّبَنًا	خَالِصًا	سَآئِغًا	لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿66﴾	وَمِنْ ثَمَرٰتِ
गोबर	और ख़ून के	दूध	ख़ालिस	ख़ुशगवार	पीने वालों के लिए	और फलों में से

النَّخِيْلِ	وَالْاَعْنَابِ	تَتَّخِذُوْنَ	مِنْهُ	سَكَرًا	وَّرِزْقًا	حَسَنًا ؕ
खजूर	और अंगूर	तुम बना लेते हो	उससे	नशा आवर चीज़	और रिज़्क़	अच्छा

اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّقَوْمٍ	يَّعْقِلُوْنَ ﴿67﴾	وَاَوْحٰى	رَبُّكَ
बेशक	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	उन लोगों के लिए	जो अक़्ल रखते हैं	और वही की	आपके रब ने

اِلَى النَّحْلِ	اَنِ	اتَّخِذِيْ	مِنَ الْجِبَالِ	بُيُوْتًا	وَّمِنَ الشَّجَرِ
तरफ़ शहद की मक्खी के	कि	तू बना ले	पहाड़ों में से	घर	और दरख़्तों में से

وَمِمَّا	يَعْرِشُوْنَ ﴿68﴾ ۙ	ثُمَّ	كُلِيْ	مِنْ كُلِّ	الثَّمَرٰتِ	فَاسْلُكِيْ
और उसमें से जो	वो ऊपर चढ़ाते हैं	फिर	खा	हर क़िस्म से	फलों की	फिर चलती रह

سُبُلَ	رَبِّكِ	ذُلُلًا ؕ	يَخْرُجُ	مِنْۢ بُطُوْنِهَا	شَرَابٌ
रास्तों पर	अपने रब के	हमवार/आसान	निकलता है	उसके पेटों से	शरबत/शहद

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّخْتَلِفٌ	اَلْوَانُهٗ	فِيْهِ	شِفَآءٌ	لِّلنَّاسِ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً
मुख़्तलिफ़ हैं	रंग उसके	उसमें	शिफ़ा है	लोगों के लिए	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता निशानी है

لِّقَوْمٍ	يَّتَفَكَّرُوْنَ (69)	وَاللّٰهُ	خَلَقَكُمْ	ثُمَّ	يَتَوَفّٰىكُمْ ۗ	وَمِنْكُمْ
उन लोगों के लिए	जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	और अल्लाह ने	पैदा किया तुम्हें	फिर	वो फ़ौत करता है तुम्हें	और तुम में से

مَّنْ	يُّرَدُّ	اِلٰٓى	اَرْذَلِ الْعُمُرِ	لِكَيْ	لَا يَعْلَمَ	بَعْدَ	عِلْمٍ
कोई	फेरा जाता है	तरफ़	नाकारा उम्र के	ताकि	ना वो जाने	बाद	जानने के

ع 9 5 15

شَيْـًٔا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌ	قَدِيْرٌ (70) ع	وَاللّٰهُ	فَضَّلَ	بَعْضَكُمْ
कुछ भी	बेशक	अल्लाह	बहुत इल्म वाला है	ख़ूब क़ुदरत वाला है	और अल्लाह ने	फ़ज़ीलत दी	तुम्हारे बाज़ को

عَلٰى بَعْضٍ	فِي الرِّزْقِ ۚ	فَمَا	الَّذِيْنَ	فُضِّلُوْا	بِرَآدِّيْ	رِزْقِهِمْ
बाज़ पर	रिज़्क़ में	तो नहीं	वो लोग जो	फ़ज़ीलत दिए गए	लौटाने वाले	रिज़्क़ अपना

عَلٰى	مَا	مَلَكَتْ	اَيْمَانُهُمْ	فَهُمْ	فِيْهِ	سَوَآءٌ ؕ	اَفَبِنِعْمَةِ
ऊपर	उनके जो	मालिक हुए	दाएँ हाथ उनके	तो वो	उसमें	यकसां/बराबर हों	क्या फिर नेअमत का

اللّٰهِ	يَجْحَدُوْنَ (71)	وَاللّٰهُ	جَعَلَ	لَكُمْ	مِّنْ اَنْفُسِكُمْ	اَزْوَاجًا
अल्लाह की	वो इंकार करते हैं	और अल्लाह ने	बनाया	तुम्हारे लिए	तुम्हारे नफ़्सों से	बीवियों को

وَّجَعَلَ	لَكُمْ	مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ	بَنِيْنَ	وَحَفَدَةً	وَّرَزَقَكُمْ
और उसने बनाया	तुम्हारे लिए	तुम्हारी बीवियों से	बेटों	और पोतों को	और उसने रिज़्क़ दिया तुम्हें

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ	اَفَبِالْبَاطِلِ	يُؤْمِنُوْنَ	وَبِنِعْمَتِ	اللّٰهِ	هُمْ
पाकीज़ा चीज़ों से	क्या फिर बातिल पर	वो ईमान रखते हैं	और नेअमत का	अल्लाह की	वो

يَكْفُرُوْنَ (72) ۙ	وَيَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	مَا	لَا يَمْلِكُ	لَهُمْ
वो इंकार करते हैं	और वो इबादत करते हैं	सिवाए	अल्लाह के	उनकी जो	नहीं मालिक होते	उनके लिए

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رِزْقًا	مِّنَ السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	شَيْـًٔا	وَّلَا	يَسْتَطِيْعُوْنَ (73) ج	فَلَا
रिज़्क़ के	आसमानों से	और ज़मीन से	कुछ भी	और ना	वो इस्तिताअत रखते हैं	पस ना

تَضْرِبُوْا	لِلّٰهِ	الْاَمْثَالَ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	وَاَنْتُمْ
तुम बयान करो	अल्लाह के लिए	मिसालें	बेशक	अल्लाह	जानता है	और तुम

لَا تَعْلَمُوْنَ (74)	ضَرَبَ	اللّٰهُ	مَثَلًا	عَبْدًا	مَّمْلُوْكًا	لَّا يَقْدِرُ
नहीं तुम जानते	बयान की	अल्लाह ने	मिसाल	एक ग़ुलाम	ममलूक की	नहीं वो क़ुदरत रखता

عَلٰى شَيْءٍ	وَّمَنْ	رَّزَقْنٰهُ	مِنَّا	رِزْقًا	حَسَنًا	فَهُوَ
किसी चीज़ पर	और उसकी जो	रिज़्क़ दिया हमने उसे	अपनी तरफ़ से	रिज़्क़	अच्छा	तो वो

يُنْفِقُ	مِنْهُ	سِرًّا	وَّجَهْرًا ط	هَلْ	يَسْتَوٗنَ ط	اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ ط
ख़र्च करता है	उसमें से	पोशीदा	और एलानिया	क्या	वो बराबर हो सकते हैं	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है

بَلْ	اَكْثَرُهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ (75)	وَضَرَبَ	اللّٰهُ	مَثَلًا	رَّجُلَيْنِ
बल्कि	अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	और बयान की	अल्लाह ने	एक मिसाल	दो मर्दों की

اَحَدُهُمَآ	اَبْكَمُ	لَا يَقْدِرُ	عَلٰى شَيْءٍ	وَّهُوَ	كَلٌّ	عَلٰى مَوْلٰىهُ لا
उन दोनों में से एक	गूंगा है	नहीं वो क़ुदरत रखता	किसी चीज़ पर	और वो	बोझ है	अपने मालिक पर

اَيْنَمَا	يُوَجِّهْهُّ	لَا يَاْتِ	بِخَيْرٍ ط	هَلْ	يَسْتَوِيْ	هُوَ لا	وَمَنْ
जहां कहीं	वो भेजता है उसे	नहीं वो लाता	कोई भलाई	क्या	बराबर हो सकता है	वो	और वो जो

يَّاْمُرُ	بِالْعَدْلِ لا	وَهُوَ	عَلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ (76) ع	وَلِلّٰهِ	غَيْبُ
हुक्म देता है	इंसाफ़ का	और वो	ऊपर रास्ते	सीधे के है	और अल्लाह ही के लिए है	ग़ैब

ع 10 6 16

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ط	وَمَآ	اَمْرُ	السَّاعَةِ	اِلَّا	كَلَمْحِ	الْبَصَرِ
आसमानों	और ज़मीन का	और नहीं	मामला	क़यामत का	मगर	जैसे झपकना	आंख का

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَدِيْرٌ (77)	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	اللّٰهَ	اِنَّ	اَقْرَبُ ؕ	هُوَ	اَوْ
ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	चीज़ के	हर	ऊपर	अल्लाह	बेशक	उससे भी ज़्यादा क़रीब	है वो	या

وَّجَعَلَ	شَيْـًٔا ۙ	لَا تَعْلَمُوْنَ	اُمَّهٰتِكُمْ	مِّنْۢ بُطُوْنِ	اَخْرَجَكُمْ	وَاللّٰهُ
और उसने बनाए	कुछ भी	नहीं तुम जानते थे	तुम्हारी मांओं के	पेटों से	निकाला तुम्हें	और अल्लाह ने

اَلَمْ	تَشْكُرُوْنَ (78)	لَعَلَّكُمْ	وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ	وَالْاَبْصَارَ	السَّمْعَ	لَكُمُ
क्या नहीं	तुम शुक्र गुज़ार बनो	ताकि तुम	और दिल	और आंखें	कान	तुम्हारे लिए

يُمْسِكُهُنَّ	مَا	السَّمَآءِ ؕ	فِيْ جَوِّ	مُسَخَّرٰتٍ	اِلَى الطَّيْرِ	يَرَوْا
थामे हुए उन्हें	नहीं	आसमान की	फ़िज़ा में	जो मुसख़्ख़र किए गए हैं	तरफ़ परिंदों के	उन्होंने देखा

وَاللّٰهُ	يُّؤْمِنُوْنَ (79)	لِّقَوْمٍ	لَاٰيٰتٍ	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	اللّٰهُ ؕ	اِلَّا
और अल्लाह ने	जो ईमान लाते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	इसमें	बेशक	अल्लाह	मगर

مِّنْ جُلُوْدِ	لَكُمْ	وَّجَعَلَ	سَكَنًا	مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ	لَكُمْ	جَعَلَ
खालों से	तुम्हारे लिए	और उसने बनाया	रहने की जगह	तुम्हारे घरों को	तुम्हारे लिए	बनाया

اِقَامَتِكُمْ ۙ	وَيَوْمَ	ظَعْنِكُمْ	يَوْمَ	تَسْتَخِفُّوْنَهَا	بُيُوْتًا	الْاَنْعَامِ
अपनी इक़ामत के	और दिन	अपने सफ़र के	दिन	तुम हल्का-फुल्का पाते हो उन्हें	घरों को	मवेशियों की

وَّمَتَاعًا	اَثَاثًا	وَاَشْعَارِهَآ	وَاَوْبَارِهَا	وَمِنْ اَصْوَافِهَا
और फ़ायदे की चीज़ें	सामान	और उनके बालों से	और उनकी पशम से	और उनकी ऊन से

وَّجَعَلَ	ظِلٰلًا	خَلَقَ	مِّمَّا	لَكُمْ	جَعَلَ	وَاللّٰهُ	اِلٰى حِيْنٍ (80)
और उसने बनाईं	साये	उसने पैदा किए	उसमें से जो	तुम्हारे लिए	बनाए	और अल्लाह ने	एक वक़्त तक

تَقِيْكُمُ	سَرَابِيْلَ	لَكُمْ	وَّجَعَلَ	اَكْنَانًا	مِّنَ الْجِبَالِ	لَكُمْ
जो बचाते हैं तुम्हें	कुर्ते	तुम्हारे लिए	और उसने बनाए	छुपने की जगहें	पहाड़ों में	तुम्हारे लिए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْحَرَّ	وَ سَرَابِيْلَ	تَقِيْكُمُ	بَاْسَكُمْ ؕ	كَذٰلِكَ	يُتِمُّ	نِعْمَتَهٗ
गर्मी से	और कुर्ते	जो बचाते हैं तुम्हें	तुम्हारी जंग से	इसी तरह	वो पूरा करता है	अपनी नेअमत को

عَلَيْكُمْ	لَعَلَّكُمْ	تُسْلِمُوْنَ (81)	فَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَاِنَّمَا	عَلَيْكَ
तुम पर	ताकि तुम	तुम फ़रमांबरदार बन जाओ	फिर अगर	वो मुंह मोड़ जाएं	तो बेशक	आप पर

الْبَلٰغُ	الْمُبِيْنُ (82)	يَعْرِفُوْنَ	نِعْمَتَ	اللّٰهِ	ثُمَّ	يُنْكِرُوْنَهَا
पहुंचाना है	खुल्लम-खुल्ला	वो पहचानते हैं	नेअमत को	अल्लाह की	फिर	वो इंकार करते हैं

ع 11 7 17

وَ اَكْثَرُهُمُ	الْكٰفِرُوْنَ (83) ع	وَ يَوْمَ	نَبْعَثُ	مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ	شَهِيْدًا	
और अक्सर उनके	नाशुक्रे हैं	और जिस दिन	हम खड़ा करेंगे	हर उम्मत से	एक गवाह	

ثُمَّ	لَا يُؤْذَنُ	لِلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَلَا	هُمْ	يُسْتَعْتَبُوْنَ (84)	وَ اِذَا
फिर	ना इजाज़त दी जाएगी	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	और ना	वो	वो उज़र क़ुबूल किए जाएंगे	और जब

رَاَ	الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	الْعَذَابَ	فَلَا	يُخَفَّفُ	عَنْهُمْ	وَلَا
देखेंगे	वो लोग जिन्होंने	ज़ुल्म किया	अज़ाब को	तो ना	तख़फ़ीफ़ की जाएगी	उनसे	और ना

هُمْ	يُنْظَرُوْنَ (85)	وَ اِذَا	رَاَ	الَّذِيْنَ	اَشْرَكُوْا	شُرَكَآءَهُمْ
वो	वो मोहलत दिए जाएंगे	और जब	देखेंगे	वो लोग जिन्होंने	शरीक बनाए	अपने शरीकों को

قَالُوْا	رَبَّنَا	هٰٓؤُلَآءِ	شُرَكَآؤُنَا	الَّذِيْنَ	كُنَّا	نَدْعُوْا
वो कहेंगे	ऐ हमारे रब	ये हैं	शरीक हमारे	वो जिन्हें	थे हम	हम पुकारते

الثلثة

مِنْ دُوْنِكَ ج	فَاَلْقَوْا	اِلَيْهِمُ	الْقَوْلَ	اِنَّكُمْ	لَكٰذِبُوْنَ (86) ج	وَ اَلْقَوْا
तेरे सिवा	तो वो डालेंगे	तरफ़ उनके	बात को	बेशक तुम	अलबत्ता झूठे हो	और वो पेश करेंगे

اِلَى اللّٰهِ	يَوْمَئِذِ	السَّلَمَ	وَ ضَلَّ	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَفْتَرُوْنَ (87)
तरफ़ अल्लाह के	उस दिन	सुलह	और गुम हो जाएंगे	उनसे	जो	थे वो	वो झूठ गढ़ते

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَصَدُّوْا	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	زِدْنٰهُمْ	عَذَابًا
वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	और रोका	अल्लाह के रास्ते से	ज़्यादा देंगे हम उन्हें	अज़ाब

فَوْقَ الْعَذَابِ	بِمَا	كَانُوْا	يُفْسِدُوْنَ (88)	وَيَوْمَ	نَبْعَثُ
ऊपर अज़ाब के	बवजह उसके जो	थे वो	वो फ़साद करते	और जिस दिन	हम उठाऐंगे

فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ	شَهِيْدًا	عَلَيْهِمْ	مِّنْ اَنْفُسِهِمْ	وَجِئْنَا بِكَ	شَهِيْدًا
हर उम्मत में	एक गवाह	उन पर	उन्हीं में से	और हम लाऐंगे आपको	गवाह बनाकर

عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ	وَنَزَّلْنَا	عَلَيْكَ	الْكِتٰبَ	تِبْيَانًا	لِّكُلِّ شَيْءٍ
उन लोगों पर	और नाज़िल की हमने	आप पर	किताब	खोल कर बयान करने वाली	हर चीज़ को

وَّهُدًى	وَّرَحْمَةً	وَّبُشْرٰى	لِلْمُسْلِمِيْنَ (89) ع	اِنَّ	اللّٰهَ	يَاْمُرُ
और हिदायत	और रहमत	और ख़ुशख़बरी	मुसलमानों के लिए	बेशक	अल्लाह	हुक्म देता है

ع 12 6 18

بِالْعَدْلِ	وَالْاِحْسَانِ	وَاِيْتَآئِ	ذِي الْقُرْبٰى	وَيَنْهٰى	عَنِ الْفَحْشَآءِ
अदल का	और एहसान का	और देने का	क़राबत दारों को	और वो रोकता है	बेहयाई से

وَالْمُنْكَرِ	وَالْبَغْيِ ج	يَعِظُكُمْ	لَعَلَّكُمْ	تَذَكَّرُوْنَ (90)	وَاَوْفُوْا	بِعَهْدِ
और बुराई	और ज़्यादती से	वो नसीहत करता है तुम्हें	ताकि तुम	तुम नसीहत पकड़ो	और पूरा करो	अहद को

اللّٰهِ	اِذَا	عٰهَدْتُّمْ	وَلَا	تَنْقُضُوا	الْاَيْمَانَ	بَعْدَ	تَوْكِيْدِهَا
अल्लाह के	जब	अहद करो तुम	और ना	तुम तोड़ो	क़समों को	बाद	उनके पक्का करने के

وَقَدْ	جَعَلْتُمُ	اللّٰهَ	عَلَيْكُمْ	كَفِيْلًا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	مَا
हालांकि तहक़ीक़	बना लिया तुमने	अल्लाह को	अपने ऊपर	ज़ामिन	बेशक	अल्लाह	जानता है	जो

تَفْعَلُوْنَ (91)	وَلَا	تَكُوْنُوْا	كَالَّتِيْ	نَقَضَتْ	غَزْلَهَا	مِنْۢ بَعْدِ
तुम करते हो	और ना	तुम हो जाओ	उस औरत की तरह	जिसने तोड़ डाला	सूत अपना	बाद

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قُوَّةٍ	اَنْكَاثًا ؕ	تَتَّخِذُوْنَ	اَيْمَانَكُمْ	دَخَلًاۢ	بَيْنَكُمْ	اَنْ
मज़बूत (कातने) के	टुकड़े-टुकड़े कर के	तुम बना लेते हो	अपनी क़समों को	बहाना	आपस में	ताकि

تَكُوْنَ	اُمَّةٌ	هِيَ	اَرْبٰى	مِنْ اُمَّةٍ ؕ	اِنَّمَا	يَبْلُوْكُمُ	اللّٰهُ
हो जाए	एक जमाअत	वो	ज़्यादा बढ़ी हुई (माल में)	(दूसरी) जमाअत से	बेशक	आज़माता है तुम्हें	अल्लाह

بِهٖ ؕ	وَلَيُبَيِّنَنَّ	لَكُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	مَا	كُنْتُمْ	فِيْهِ
साथ उसके	और अलबत्ता वो ज़रूर वाज़ेह करेगा	तुम्हारे लिए	दिन	क़यामत के	वो जो	थे तुम	जिसमें

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿92﴾	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	لَجَعَلَكُمْ	اُمَّةً	وَّاحِدَةً	وَّلٰكِنْ
तुम इख़्तिलाफ़ करते	और अगर	चाहता	अल्लाह	अलबत्ता वो बना देता तुम्हें	उम्मत	एक ही	और लेकिन

يُّضِلُّ	مَنْ	يَّشَآءُ	وَيَهْدِيْ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَلَتُسْـَٔلُنَّ
वो गुमराह करता है	जिसे	वो चाहता है	और वो हिदायत देता है	जिसे	वो चाहता है	और अलबत्ता तुम ज़रूर सवाल किए जाओगे

عَمَّا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿93﴾	وَلَا	تَتَّخِذُوْٓا	اَيْمَانَكُمْ	دَخَلًاۢ
उसके बारे में जो	थे तुम	तुम अमल करते	और ना	तुम बनाओ	अपनी क़समों को	धोखा देने का ज़रिया

بَيْنَكُمْ	فَتَزِلَّ	قَدَمٌۢ	بَعْدَ	ثُبُوْتِهَا	وَتَذُوْقُوا	السُّوْٓءَ
आपस में	वरना फिसल जाएगा	क़दम	बाद	उसके जम जाने के	और तुम चखोगे	बुराई/सज़ा

بِمَا	صَدَدْتُّمْ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ	وَلَكُمْ	عَذَابٌ	عَظِيْمٌ ﴿94﴾
बवजह उसके जो	रोका तुमने	अल्लाह के रास्ते से	और तुम्हारे लिए	अज़ाब है	बहुत बड़ा

وَلَا	تَشْتَرُوْا	بِعَهْدِ اللّٰهِ	ثَمَنًا	قَلِيْلًا ؕ	اِنَّمَا	عِنْدَ اللّٰهِ
और ना	तुम लो	बदले अल्लाह के अहद के	क़ीमत	थोड़ी	बेशक जो	अल्लाह के पास है

هُوَ	خَيْرٌ	لَّكُمْ	اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ ﴿95﴾	مَا	عِنْدَكُمْ
वो	बेहतर है	तुम्हारे लिए	अगर	हो तुम	तुम जानते	जो कुछ	तुम्हारे पास है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَنْفَدُ	وَمَا	عِنْدَ اللّٰهِ	بَاقٍ ؕ	وَلَنَجْزِيَنَّ	الَّذِيْنَ	صَبَرُوْٓا
ख़त्म हो जाएगा	और जो कुछ	अल्लाह के पास है	बाक़ी रहने वाला है	और अलबत्ता हम ज़रूर बदले में देंगे	उनको जिन्होंने	सब्र किया

اَجْرَهُمْ	بِاَحْسَنِ	مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (96)	مَنْ	عَمِلَ	صَالِحًا
अजर उनका	बेहतरीन	उसका जो	थे वो	वो अमल करते	जिसने	अमल किया	नेक

مِّنْ ذَكَرٍ	اَوْ	اُنْثٰى	وَهُوَ	مُؤْمِنٌ	فَلَنُحْيِيَنَّهٗ	حَيٰوةً	طَيِّبَةً ۚ
ख़्वाह कोई मर्द हो	या	औरत	जबकि वो	मोमिन हो	पस अलबत्ता हम ज़रूर ज़िंदगी देंगे उसे	ज़िंदगी	पाकीज़ा

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ	اَجْرَهُمْ	بِاَحْسَنِ	مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (97)
और अलबता हम ज़रूर बदले में देंगे उन्हें	अजर उनका	बेहतरीन	उसका जो	थे वो	वो अमल करते

فَاِذَا	قَرَاْتَ	الْقُرْاٰنَ	فَاسْتَعِذْ	بِاللّٰهِ	مِنَ الشَّيْطٰنِ	الرَّجِيْمِ (98)
फिर जब	पढ़ें आप	क़ुरआन को	तो पनाह मांगिए	अल्लाह की	शैतान से	जो मरदूद है

اِنَّهٗ	لَيْسَ	لَهٗ	سُلْطٰنٌ	عَلَى الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَلٰى رَبِّهِمْ
बेशक वो	नहीं है	उसका	कोई ज़ोर	उन लोगों पर जो	ईमान लाए	और अपने रब पर ही

يَتَوَكَّلُوْنَ (99)	اِنَّمَا	سُلْطٰنُهٗ	عَلَى الَّذِيْنَ	يَتَوَلَّوْنَهٗ	وَالَّذِيْنَ
वो तवक्कुल करते हैं	बेशक	ज़ोर उसका	उन लोगों पर है जो	दोस्त बनाते हैं उसे	और (उन पर) जो

هُمْ	بِهٖ	مُشْرِكُوْنَ (100) ع	وَاِذَا	بَدَّلْنَآ	اٰيَةً	مَّكَانَ	اٰيَةٍ ۙ
वो	उसकी वजह से	शिर्क करने वाले हैं	और जब	बदल देते हैं हम	किसी आयत को	जगह	आयत के

ع 13 11 19

وَّاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِمَا	يُنَزِّلُ	قَالُوْٓا	اِنَّمَآ	اَنْتَ	مُفْتَرٍ ؕ
और अल्लाह	ख़ूब जानता है	उसको जो	वो नाज़िल करता है	वो कहते हैं	बेशक	तू	गढ़ने वाला है

بَلْ	اَكْثَرُهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ (101)	قُلْ	نَزَّلَهٗ	رُوْحُ الْقُدُسِ
बल्कि	अक्सर उनके	नहीं वो जानते	कह दीजिए	नाज़िल किया है उसे	रूहुल क़ुदुस ने

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّبُشْرٰى	وَهُدًى	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	لِيُثَبِّتَ	بِالْحَقِّ	مِنْ رَّبِّكَ
और ख़ुशख़बरी है	और हिदायत	ईमान लाए	उन्हें जो	ताकि वो साबित क़दम रखे	साथ हक़ के	आपके रब की तरफ़ से

يُعَلِّمُهٗ	اِنَّمَا	يَقُوْلُوْنَ	اَنَّهُمْ	نَعْلَمُ	وَلَقَدْ	لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿102﴾
सिखाता है उसे	बेशक	वो कहते हैं	बेशक वो	हम जानते हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	मुसलमानों के लिए

وَّهٰذَا	اَعْجَمِيٌّ	اِلَيْهِ	يُلْحِدُوْنَ	الَّذِيْ	لِسَانُ	بَشَرٌ ؕ
और ये	अजमी है	तरफ़ जिसके	वो ग़लत निस्बत करते हैं	इसकी	ज़बान	एक इंसान

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِنَّ	مُّبِيْنٌ ﴿103﴾	عَرَبِيٌّ	لِسَانٌ
साथ अल्लाह की आयात के	नहीं ईमान लाते	वो लोग जो	बेशक	वाज़ेह	अरबी	ज़बान है

يَفْتَرِى	اِنَّمَا	اَلِيْمٌ ﴿104﴾	عَذَابٌ	وَلَهُمْ	اللّٰهُ	لَا يَهْدِيْهِمُ
गढ़ लेते हैं	बेशक	दर्दनाक	अज़ाब	और उनके लिए है	अल्लाह	नहीं हिदायत देता उन्हें

هُمُ	وَاُولٰٓئِكَ	اللّٰهِ ۚ	بِاٰيٰتِ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ	الْكَذِبَ
वो	और यही लोग हैं	अल्लाह की	साथ आयात के	नहीं ईमान लाते	वो लोग जो	झूठ को

مَنْ	اِلَّا	اِيْمَانِهٖٓ	مِنْۢ بَعْدِ	بِاللّٰهِ	كَفَرَ	مَنْ	الْكٰذِبُوْنَ ﴿105﴾
उसके जो	सिवाए	अपने ईमान लाने के	बाद	साथ अल्लाह के	कुफ़्र करे	जो कोई	जो झूठे हैं

شَرَحَ	مَّنْ	وَلٰكِنْ	بِالْاِيْمَانِ	مُطْمَئِنٌّۢ	وَقَلْبُهٗ	اُكْرِهَ
खोल दे	जो कोई	और लेकिन	ईमान पर	मुत्मइन है	और दिल उसका	मजबूर किया गया

عَذَابٌ	وَلَهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ ۚ	غَضَبٌ	فَعَلَيْهِمْ	صَدْرًا	بِالْكُفْرِ
अज़ाब	और उनके लिए है	अल्लाह की तरफ़ से	ग़ज़ब है	तो उन पर	सीना	कुफ़्र के लिए

عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ	الدُّنْيَا	الْحَيٰوةَ	اسْتَحَبُّوا	بِاَنَّهُمْ	ذٰلِكَ	عَظِيْمٌ ﴿106﴾
आख़िरत पर	दुनिया की	ज़िंदगी को	उन्होंने तरजीह दी	बवजह इसके कि वो	ये	बहुत बड़ा

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ اَنَّ	اللّٰهَ	لَا يَهۡدِى	الۡقَوۡمَ	الۡكٰفِرِيۡنَ (107)	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيۡنَ	طَبَعَ
और बेशक	अल्लाह	नहीं हिदायत देता	उन लोगों को	जो काफ़िर हैं	यही लोग हैं	वो जो	मोहर लगा दी

اللّٰهُ	عَلٰى	قُلُوۡبِهِمۡ	وَسَمۡعِهِمۡ	وَ اَبۡصَارِهِمۡ ۚ	وَ اُولٰٓئِكَ	هُمُ
अल्लाह ने	ऊपर	उनके दिलों के	और उनके कानों के	और उनकी आंखों के	और यही लोग हैं	वो

الۡغٰفِلُوۡنَ (108)	لَا جَرَمَ	اَنَّهُمۡ	فِى الۡاٰخِرَةِ	هُمُ	الۡخٰسِرُوۡنَ (109)	ثُمَّ
जो ग़ाफ़िल हैं	नहीं कोई शक	यक़ीनन वो	आख़िरत में	वो ही	ख़सारा पाने वाले हैं	फिर

اِنَّ	رَبَّكَ	لِلَّذِيۡنَ	هَاجَرُوۡا	مِنۡۢ بَعۡدِ	مَا	فُتِنُوۡا	ثُمَّ
बेशक	रब आपका	उनके लिए जिन्होंने	हिजरत की	बाद इसके	जो	वो आज़माइश में डाले गए	फिर

جٰهَدُوۡا	وَصَبَرُوۡۤا	اِنَّ	رَبَّكَ	مِنۡۢ بَعۡدِهَا	لَغَفُوۡرٌ
उन्होंने जिहाद किया	और उन्होंने सब्र किया	बेशक	रब आपका	बाद इसके	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيۡمٌ (110) ع	يَوۡمَ	تَاۡتِىۡ	كُلُّ	نَفۡسٍ	تُجَادِلُ	عَنۡ نَّفۡسِهَا	
निहायत रहम करने वाला है	जिस दिन	आएगा	हर	नफ़्स	वो झगड़ेगा	अपने नफ़्स के बारे में	ع 14 10 20

وَتُوَفّٰى	كُلُّ	نَفۡسٍ	مَّا	عَمِلَتۡ	وَهُمۡ	لَا يُظۡلَمُوۡنَ (111)	وَضَرَبَ
और पूरा-पूरा दिया जाएगा	हर	नफ़्स को	जो	उसने अमल किया	और वो	ना वो ज़ुल्म किए जाएंगे	और बयान की

اللّٰهُ	مَثَلًا	قَرۡيَةً	كَانَتۡ	اٰمِنَةً	مُّطۡمَئِنَّةً	يَّاۡتِيۡهَا	رِزۡقُهَا
अल्लाह ने	मिसाल	एक बस्ती की	वो थी	अमन वाली	मुत्मइन	आता था उसके पास	रिज़्क़ उसका

رَغَدًا	مِّنۡ كُلِّ مَكَانٍ	فَكَفَرَتۡ	بِاَنۡعُمِ اللّٰهِ	فَاَذَاقَهَا	اللّٰهُ
बाफ़राग़त	हर जगह से	तो उसने नाशुक्री की	अल्लाह की नेअमतों की	तो चखाया उसे	अल्लाह ने

لِبَاسَ	الۡجُوۡعِ	وَالۡخَوۡفِ	بِمَا	كَانُوۡا	يَصۡنَعُوۡنَ (112)	وَلَقَدۡ	جَآءَهُمۡ
लिबास	भूख का	और ख़ौफ़ का	बवजह उसके जो	थे वो	वो किया करते	और अलबत्ता तहक़ीक़	आया उनके पास

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَسُوْلٌ	مِّنْهُمْ	فَكَذَّبُوْهُ	فَاَخَذَهُمُ	الْعَذَابُ	وَهُمْ	ظٰلِمُوْنَ ﴿113﴾
एक रसूल	उनमें से	तो उन्होंने झुठला दिया उसे	तो पकड़ लिया उन्हें	अज़ाब ने	जबकि वो	ज़ालिम थे

فَكُلُوْا	مِمَّا	رَزَقَكُمُ	اللّٰهُ	حَلٰلًا	طَيِّبًا ص	وَّاشْكُرُوْا	نِعْمَتَ اللّٰهِ
पस खाओ	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया तुम्हें	अल्लाह ने	हलाल	पाक	और शुक्र करो	अल्लाह की नेअमत का

اِنْ	كُنْتُمْ	اِيَّاهُ	تَعْبُدُوْنَ ﴿114﴾	اِنَّمَا	حَرَّمَ	عَلَيْكُمُ	الْمَيْتَةَ
अगर	हो तुम	सिर्फ़ उसी की	तुम इबादत करते	बेशक	उसने हराम किया	तुम पर	मुर्दार

وَالدَّمَ	وَلَحْمَ	الْخِنْزِيْرِ	وَمَآ	اُهِلَّ	لِغَيْرِ	اللّٰهِ	بِهٖ ج	فَمَنِ
और ख़ून	और गोश्त	ख़िन्ज़ीर का	और जो	पुकारा जाए	वास्ते ग़ैर	अल्लाह के	उस पर	तो जो कोई

اضْطُرَّ	غَيْرَ	بَاغٍ	وَّلَا	عَادٍ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ
मजबूर किया गया	ना	रग़बत करने वाला हो	और ना	हद से गुज़रने वाला	तो बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيْمٌ ﴿115﴾	وَلَا	تَقُوْلُوْا	لِمَا	تَصِفُ	اَلْسِنَتُكُمُ	الْكَذِبَ	هٰذَا
निहायत रहम करने वाला है	और ना	तुम कहो	वो जो	बयान करती हैं	ज़बानें तुम्हारी	झूठ	कि ये

حَلٰلٌ	وَّهٰذَا	حَرَامٌ	لِّتَفْتَرُوْا	عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ ط	اِنَّ	الَّذِيْنَ
हलाल है	और ये	हराम है	ताकि तुम गढ़ सको	अल्लाह पर	झूठ	बेशक	वो लोग जो

يَفْتَرُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ	لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿116﴾ ط	مَتَاعٌ	قَلِيْلٌ ص	وَّلَهُمْ
गढ़ते हैं	अल्लाह पर	झूठ	नहीं वो फ़लाह पाऐंगे	फ़ायदा है	थोड़ा सा	और उनके लिए है

عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿117﴾	وَعَلَى	الَّذِيْنَ	هَادُوْا	حَرَّمْنَا	مَا	قَصَصْنَا
अज़ाब	दर्दनाक	और ऊपर	उन लोगों के जो	यहूदी बन गए	हराम कर दिया हमने	जो	बयान किया हमने

عَلَيْكَ	مِنْ قَبْلُ ج	وَمَا	ظَلَمْنٰهُمْ	وَلٰكِنْ	كَانُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ
आप पर	इससे पहले	और नहीं	ज़ुल्म किया था हमने उन पर	और लेकिन	थे वो	अपनी ही जानों पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَظْلِمُوْنَ ﴿118﴾	ثُمَّ	اِنَّ	رَبَّكَ	لِلَّذِيْنَ	عَمِلُوا	السُّوْٓءَ
वो ज़ुल्म करते	फिर	बेशक	रब आपका	उन लोगों के लिए जिन्होंने	अमल किए	बुरे

بِجَهَالَةٍ	ثُمَّ	تَابُوْا	مِنْۢ بَعْدِ	ذٰلِكَ	وَاَصْلَحُوْٓا ۙ	اِنَّ	رَبَّكَ
बवजह जहालत के	फिर	उन्होंने तौबा कर ली	बाद	उसके	और उन्होंने इस्लाह कर ली	बेशक	रब आपका

مِنْۢ بَعْدِهَا	لَغَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿119﴾ ع	اِنَّ	اِبْرٰهِيْمَ	كَانَ	اُمَّةً	ع 15 9 21
बाद इसके	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	बेशक	इब्राहीम	था	एक उम्मत	

قَانِتًا	لِّلّٰهِ	حَنِيْفًا ؕ	وَلَمْ	يَكُ	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿120﴾ ۙ	شَاكِرًا
मुतीअ/फ़रमांबरदार	अल्लाह के लिए	यकसू	और ना	था वो	मुशरिकीन में से	शुक्रगुज़ार था

لِّاَنْعُمِهِ ؕ	اِجْتَبٰىهُ	وَهَدٰىهُ	اِلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ ﴿121﴾	وَاٰتَيْنٰهُ
उसकी नेअमतों पर	उसने चुन लिया उसे	और उसने हिदायत दी उसे	तरफ़ रास्ते	सीधे के	और दी हमने उसे

فِى الدُّنْيَا	حَسَنَةً ؕ	وَاِنَّهٗ	فِى الْاٰخِرَةِ	لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿122﴾ ؕ	ثُمَّ
दुनिया में	भलाई	और बेशक वो	आख़िरत में	अलबत्ता सालेहीन में से है	फिर

اَوْحَيْنَآ	اِلَيْكَ	اَنِ	اتَّبِعْ	مِلَّةَ	اِبْرٰهِيْمَ	حَنِيْفًا ؕ	وَمَا
वही की हमने	तरफ़ आपके	कि	पैरवी कीजिए	तरीक़े की	इब्राहीम के	जो यकसू था	और ना

كَانَ	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿123﴾	اِنَّمَا	جُعِلَ	السَّبْتُ	عَلَى الَّذِيْنَ
था वो	मुशरिकीन में से	बेशक	फ़र्ज़ किया गया	हफ़्ते का दिन	उन लोगों पर

اخْتَلَفُوْا	فِيْهِ ؕ	وَاِنَّ	رَبَّكَ	لَيَحْكُمُ	بَيْنَهُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ
जिन्होंने इख़्तिलाफ़ किया	उसमें	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो फ़ैसला करेगा	दर्मियान उनके	दिन	क़यामत के

فِيْمَا	كَانُوْا	فِيْهِ	يَخْتَلِفُوْنَ ﴿124﴾	اُدْعُ	اِلٰى سَبِيْلِ	رَبِّكَ
उसमें जो	थे वो	जिसमें	वो इख़्तिलाफ़ करते	दावत दीजिए	तरफ़ रास्ते के	अपने रब के

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِالْحِكْمَةِ	وَالْمَوْعِظَةِ	الْحَسَنَةِ	وَجَادِلْهُمْ	بِالَّتِيْ	هِيَ
साथ हिक्मत के	और नसीहत के	जो अच्छी हो	और बहस कीजिए उनसे	साथ उस तरीक़े के	वो जो

اَحْسَنُ ؕ	اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	اَعْلَمُ	بِمَنْ	ضَلَّ	عَنْ سَبِيْلِهٖ
बेहतरीन है	बेशक	रब आपका	वो	ख़ूब जानता है	उसे जो	भटक गया	उसके रास्ते से

وَهُوَ	اَعْلَمُ	بِالْمُهْتَدِيْنَ (125)	وَاِنْ	عَاقَبْتُمْ	فَعَاقِبُوْا	بِمِثْلِ
और वो	ख़ूब जानता है	हिदायत याफ़्ता को	और अगर	बदला लो तुम	तो बदला लो	मानिंद

مَا	عُوْقِبْتُمْ	بِهٖ ؕ	وَلَئِنْ	صَبَرْتُمْ	لَهُوَ	خَيْرٌ	لِّلصّٰبِرِيْنَ (126)
उसके जो	तकलीफ़ दिए गए तुम	साथ जिसके	और अलबत्ता अगर	सब्र करो तुम	अलबत्ता वो	बेहतर है	सब्र करने वालों के लिए

وَاصْبِرْ	وَمَا	صَبْرُكَ	اِلَّا	بِاللّٰهِ	وَلَا	تَحْزَنْ	عَلَيْهِمْ
और सब्र कीजिए	और नहीं	सब्र आपका	मगर	साथ अल्लाह (की तौफ़ीक़) के	और ना	आप ग़म कीजिए	उन पर

وَلَا	تَكُ	فِيْ ضَيْقٍ	مِّمَّا	يَمْكُرُوْنَ (127)	اِنَّ	اللّٰهَ
और ना	आप हों	घुटन/तंगी में	उससे जो	वो चालें चल रहे हैं	बेशक	अल्लाह

مَعَ	الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	وَّالَّذِيْنَ	هُمْ	مُّحْسِنُوْنَ (128) ع
साथ है	उनके जो	तक़वा करें	और वो लोग जो	वो	एहसान करने वाले हैं

ع 16 9 22

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION